

नमः शिवाय

शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

(शिवताण्डव, शिवस्तुति, शिवपंचाक्षर स्तोत्र सहित)
भाषाटीका सहितम्

प्रकाशक

भारतीय संस्कृत भवन

माई हीरां गेट, जालन्धर शहर 144008

द्वितीया वृत्ति 1991

मूल्य RS 5/-
inclusive of all taxes

This book belongs to :-

Avtar Krishen Koul

R/o Syed Kocha (Kawadara)

Sgr - 2 (KASHMIR)

اوم کمہ شتوائے

آدی نام اگھم دم - ویادی نام مولہ کرنتم
اوپدرہ ونام دلم - مہادیوم اوپاس ہے -

ایم پاپی پاپہ - خہ پنہ پنونا شنکرہ بھوان -
ایم بیتو بیتاہ بھروستہ رہے ویہ نام -
ایم دیہو دھرنہ - ودہ - ست ہ تو دم -
نہ جانے ہم - وکتوم - کورو - سکلہ شتو چیے ہیہ کرپام -

جناہ تود - پادم - جہ - شرونہ - منہ دھیانہ پنونا
سویم تے - بنس تیرنا - نہ کھلہ کرونا - تیشو کرونا -
بروی - پینی - دینی - ہیہ منہ چینی نہ کرونا -
سکھم ناتھے - کھیانا - تو م ایسہ کرونا سگدہ ایتہ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी ।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥
अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ।
ममाप्येष स्तोत्रे हर ! निरपवादः परिकरः ॥1॥

हे हर ! (सभी दुःखों के हरने वाले) आपकी महिमा के अन्त को न जानने वाले मुझ अज्ञानी से की गई स्तुति यदि आपकी महिमा के अनुकूल हो, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । क्योंकि ब्रह्मा आदि भी आपकी महिमा के अन्त को नहीं जानते हैं । अतः उनकी स्तुति भी आपके योग्य नहीं है । "स वाग् यया तस्य गुणान् गृणीते" के अनुसार यथामति मेरी स्तुति उचित ही है । क्योंकि—"नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्रिणः" इस न्याय से मेरी स्तुति आरम्भ करना क्षम्य हो ॥1॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः ।
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥2॥

हे हर ! आपकी निर्गुण और सगुण महिमा मन और वाणी के विषय से परे है जिसे वेद भी संकुचित होकर कहते हैं । अतः आपकी उस महिमा की स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है । तब भी अर्वाचीन (भक्तों के अनुग्रहार्थ धारण किया हुआ नवीन) रूप भक्तों के मन और वाणी का विषय हो सकता है ॥2॥

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तवब्रह्मांकिवागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ॥

मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः ।
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥3॥

हे ब्रह्मन् ! जब कि आपने मधु के सदृश मधुर और अमृत के सदृश जीवनदायिनी वेदरूपी बाणी को प्रकाशित किया है, तब ब्रह्मादि से की गई स्तुति आपको कैसे प्रसन्न कर सकती है ? हे त्रिपुरमथन ! जब ब्रह्मादि भी आपकी स्तुति गान करने में समर्थ नहीं हैं, तब मुझ तुच्छ की क्या सामर्थ्य है ? मैं तो केवल आपके गुण-गान से अपनी बाणी को पवित्र करने की इच्छा करता हूं ॥3॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षा प्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ॥
अभव्यानामस्मिन्वरद ! रमणीयामरमणीम् ।
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥4॥

हे वरद ! (वर देने वाले) आपके ऐसे ऐश्वर्य का जो संसार की सृष्टि, रक्षा तथा प्रलय करने वाला है, तीनों वेदों से गाया हुआ है, तीनों गुणों (सत्, रज, तम) से परे है, तीनों शक्तियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में व्याप्त है, कुछ नास्तिक अनुचित निन्दा करते हैं । इससे उन्हीं का अधः पतन होता है न कि आपके यश का ॥4॥

किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम् ।
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ॥
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः ।
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥5॥

"अचिन्त्याः खलु ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत्" के अनुसार कल्पना से बाहर, अपनी अलौकिक माया से सृष्टि करने वाले आपके ऐश्वर्य के विषय में नास्तिकों का यह (वह ब्रह्मा सृष्टि करता है, किन्तु उसकी इच्छा, शरीर सहकारी कारण आधार और समवायि-कारण क्या

है ? कुतर्क जगत् के कतिपय मन्द मति वालों को भ्रान्ति से बाचाल करता है क्योंकि आपका अविच्छिन्न सुयश अतर्क्य है, अर्थात् संदेह करने योग्य कदापि सम्भव नहीं है ॥5॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ॥
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥6॥

हे अमर वर ! (देवश्रेष्ठ) यह सावयव लोक अवश्य ही जन्य है तथा इसका कर्ता भी कोई न कोई है परन्तु वह कर्ता आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं हो सकता क्योंकि इस विचित्र संसार की विचित्ररचना की सामग्री दूसरे के पास असम्भव हैं । इसलिये अज्ञानी लोग ही तुम्हारे विषय में सन्देह करते हैं ॥6॥

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति ।
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ॥
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम् ।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥7॥

हे अमरवर ! वेदत्रयी, सांख्य योग, शैव मत और वैष्णव मत ऐसे भिन्न-भिन्न मतों में कोई वैष्णव मत और कोई शैव मत अच्छा कहते हैं, रुचि की विचित्रता से टेढ़े सीधे मार्ग में प्रवृत्त हुए मनुष्यों को अन्त में एक आप ही साक्षात् या परम्परया प्राप्त होते हो, जैसे नदियां टेढ़ी-सीधी बहती हुई साक्षात् या परम्परा से समुद्र में ही मिलती हैं ॥7॥

महोक्षः खट्वाङ्गम्परशुरजिनं भस्म फणिनः ।
कपालं चेतीयत्तव वरद ! तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहिताम् ॥
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥8॥

हे वरद ! महोक्ष (बैल), खटिया का पाया, परशु, गजचर्म, भस्म, सर्प, कपाल इत्यादि आपकी धारण सामग्रियां हैं, परन्तु उन ऋद्धियों को जो आपकी कृपा से प्राप्त देवता लोग भोगते हैं, आप क्यों नहीं भोगते ? स्वात्माराम (आत्मज्ञानी) को विषय (रूपरसादि) रूपी) मृगतृष्णा नहीं भ्रमा सकती ॥8॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिदम् ।
परोध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव ॥
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥9॥

हे पुरमथन ! सांख्य मतानुयायी "नह्यसतः उत्पत्तिः सम्भवति" के अनुसार जगत् को ध्रुव (नित्य) बुद्धमतानुयायी अध्रुव (क्षणिक) तार्किकजन नित्य (आकाश आदि पञ्च और पृथिव्यादि परमाणु और अनित्य कार्यद्रव्य) दोनों मानते हैं। इन मतान्तरों से विस्मित मैं भी आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित नहीं होता, क्योंकि वाचालता लज्जा को स्थान नहीं देती ॥9॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरिविरञ्चिर्हरिरधः ।
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ॥
ततो भक्ति श्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश ! यत् ।
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥10॥

हे गिरीश [गिरि में शयन करने वाले], तेजः पुंज आपकी विभूति को ढूंढने के लिए ब्रह्मा आकाश तक और विष्णु पाताल तक जाकर भी उसे पाने में असमर्थ रहे, तत्पश्चात् उनकी कायिक, मानसिक और वाचिक सेवा से प्रसन्न होकर आप स्वयं प्रकट हुए इससे यह निश्चय है कि आपकी सेवा से ही सब सुलभ है ॥10॥

अयत्नादापाद्यत्रिभुवनमवैरव्यतिकरम् ।

दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः ।
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर ! विस्फूर्जितमिदम् ।।11।

हे त्रिपुरहर ! मस्तकरूपी कमल की माला जिस रावण ने आपके कमलवत् चरणों में अर्पण कर के त्रिभुवन को निष्कण्टक बनाया था तथा युद्ध के लिए सर्वदा उत्सुक रहने वाली भुजाओं को पाया था, वह आपकी अविरल भक्ति का ही परिणाम था ।।11।।

अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनम् ।
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि ।
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ।।12।।

रावणने उन्हीं भुजाओं से जिन्होंने आपकी सेवा से बल प्राप्त किया था, आपके घर कैलाश को उखाड़ने के लिए हठात् प्रयोग करते ही आपके अंगूठे के अग्र भाग के संकेत मात्र से वह पाताल में गिरा, निश्चय ही खल उपकार को भूल जाते हैं ।12।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनम् ।।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ।।13।।

हे वरद ! बाणासुर ने आपको नमस्कार मात्र से इन्द्र की सम्पत्ति को नीचा दिखलाने वाली सम्पत्ति प्राप्त की थी और त्रिभुवन को अपना परिजन बना लिया था । यह आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि आपके चरणों में नमस्कार करना किस की उन्नति का कारण नहीं होता ।।13।।

अकाण्ड—ब्रह्माण्ड-क्षयचकितदेवासुरकृपा,

विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।।
स कल्माषःकण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो ।
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ।।14।।

हे त्रिनयन ! सिन्धु विमंथन से उत्पन्न कालकूट से असमय मे ब्रह्माण्ड के नाश से डरे हुए सुर व असुरों पर कृपा करके एवं संसार को बचाने की इच्छा से उसको [काल कूट को] पान करने से आपके कण्ठ की कालिमा भी शोभा देती है। ठीक ही है, जगत् के उपकार की कामना वाले दूषण भूषण समझे जाते है ।।14।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुर नरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयनो यस्य विशिखा ।।
स पश्यन्नीश ! त्वामितरसुरसाधारणमभूत् ।
स्मरःस्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ।।15

जो विजय कामदेव अपने बाणों द्वारा जगत् के देव, मनुष्य औ राक्षसों को जीतने में सर्वथा समर्थ रहा, वही कामदेवने अन्य देवों के समान आपको भी समझा, जिससे वह स्मरण मात्र के लिये ही रह गय [दग्ध हो गया] जितेन्द्रियों का अनादर करना अहितकारक ही होत है ।।15।।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा ।
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।।16।।

हे ईश ! आप जगत् की रक्षा के लिए राक्षसों को मोहित कर नाश के लिए नृत्य करते हो, तब भी संसार का आपके ताण्डव से दुःख दू होता है क्योंकि आपके चरणों के आघात से पृथ्वी धँसने लगती है, दिशा बाहुओं के संघर्ष से आकाश पीड़ित हो जाता है तथा आपकी चञ्च जटाओं से ताड़ित हुआ स्वर्ग लोक भी कम्पायमान हो जाता है। ठीक

है उपकार भी किसी के लिए अहितकारक हो जाता है ।16।।

वियद्व्यापीतारागणगृणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम-दिव्यं तव वपुः ।।17।।

हे ईश ! तारा गणों की कान्ति से अत्यन्त शोभायमान आकाश में व्याप्त तथा भूलोक को चारों ओर से घेरकर जम्बूद्वीप बनाने वाला गङ्गा का जल प्रवाह आपके जटाकपाल में बूँद से भी लघु देखा जाता है। इतने से ही आपके दिव्य तथा श्रेष्ठ शरीर की कल्पना की जा सकती है ।।17।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिनगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि—
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रताः प्रभुधियः ।।18।।

हे ईश ! तृण के समान त्रिपुर को जलाने के लिए पृथ्वी को रथ, ब्रह्माको सारथी, हिमालय को धनुष, सूर्य-चन्द्रको रथका चक्र तथा विष्णु को विषधर बाण बनाना आपका आडम्बर मात्र है। विचित्र वस्तुओं से क्रीडा करते हुए समर्थों की बुद्धि स्वतन्त्र होती है ।।18।।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो—
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा—
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।19।

हे त्रिपुरहर ! विष्णु आपके चरणों में प्रतिदिन सहस्र कमलों का उपहार देते थे । एक दिन की कमी होने के कारण उन्होंने अपने एक कमलवत् नेत्रको निकाल कर पूरा किया। यह भक्ति की परम सीमा चक्र के रूप में आज भी संसार की रक्षा किया करती है ।।19।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवम् ।
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसु जनः ।।20।।

हे त्रिपुरहर ! आप ही को यज्ञ के फल का दाता समझ कर, वेद में दृढ़ विश्वास कर मनुष्य कर्मों का आरम्भ करते हैं। क्रिया रूप यज्ञ के समाप्त होने पर आप ही फल देने वाले रहते हैं । आपकी आराधना के बिना नष्ट कर्म फलदायक नहीं होता ।।20।।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता—
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषु फलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।।21।।

हे शरणद ! कर्मकुशल यज्ञपति दक्षपति दक्ष के यज्ञ के ऋषिगण ऋत्विज, देवता सदस्य थे । फिर भी यज्ञ के फल देने वाले आप की अप्रसन्नता से वह ध्वंस हो गया। निश्चय ही आप में श्रद्धा रहित किया गया यज्ञ नाश के लिए ही होता है ।।21।।

प्रजानाथं नाथ ! प्रसभमधिकं स्वां दुहितरम्
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा ।।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम् ।
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।।22।।

हे नाथ ! काल से प्रेरित मृगरूप धारण किये ब्रह्मा के भय से मृगी रूपी धारण करने वाली अपनी कन्या में आसक्त देख, आपका उनके पीछे छोड़ा गया बाण आर्द्रा आज भी नक्षत्र रूप से मृगशिरा (ब्रह्मा) के पीछे वर्तमान है ।।22।।

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत् ।
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।।
यदिस्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्ध-घटनाद्
अवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ।।23।। (24)

हे यम नियम वाले त्रिपुरहर ! आपकी कृपा से आपका अर्धस्थान प्राप्त करने वाली, अपने सौन्दर्य रूपी धनुष को धारण करने वाले कामदेव को भस्म हुआ देखकर भी यदि पार्वती आपको अपने अधीन समझें तो ठीक ही है, क्योंकि प्रायः युवतियां ज्ञानहीन होती हैं ।।23।।

श्मशानेष्वाक्रीडास्मरहर ! पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम् ।
तथापि स्मर्तृणां वरद ! परमं मङ्गलमसि ।।24।। (25)

हे स्मरहर ! आपका श्मशान में क्रीडा करना, भूत-प्रेत-पिशाचादि को साथ रखना, शरीर में चिता की भस्म का लेप करना तथा नर मुण्डों की माला पहनना आदि वीभत्स कर्मों से यद्यपि आपका चरित अमगल है, तथापि स्मरण करने वालों को हे वरद ! आप सर्वदा परम मंगलरूप हैं ।।24।।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्त-

पृथक् करके मन को स्थिर कर, विधि पूर्वक प्राणायाम से पुलकित तथा आनन्दाश्रु से युक्त योगीजन ज्ञानदृष्टि से जिसे देखकर परमानन्द का अनुभव करते हैं, वह आप ही हैं ॥25॥

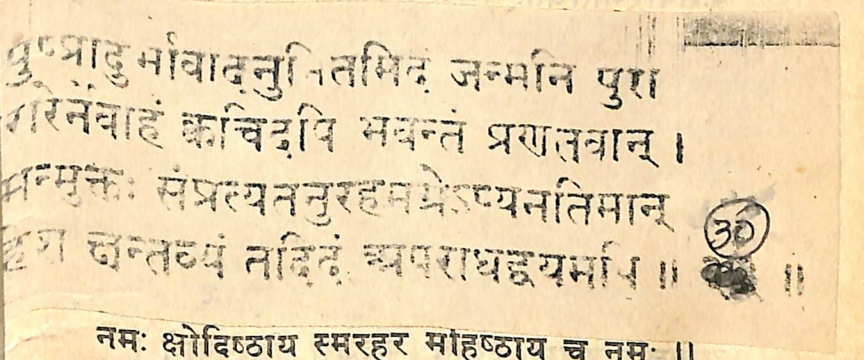
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वंहुतवह—
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वम् धरणिरात्मा त्वमिति च ॥
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम् ।
न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

हे वरद ! आपके विषय में ज्ञानीजनों की यह धारणा है "क्षितिर्हुतवह क्षेत्रज्ञाम्भः प्रभंजन चन्द्रमस्तपनवियदित्यष्टा मूर्तिर्नमोभवविभ्रते ।" इस श्रुति के अनुसार सूर्य चन्द्रमा, वायु, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी और आत्मा भी आप ही हैं, किन्तु मेरे विचार से कोई स्थान नहीं हैं; जहां आप व्याप्त न हों ॥26॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तिस्त्रिभुवनमथोत्रीनपि सुरा ।
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः ॥
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः ।
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद ! गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

हे शरणद ! व्यस्त (अ, उ, म.) 'ओं' पद, शक्ति द्वारा तीन वेद (ऋग्, यजुः और साम), तीन वृत्ति (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति), त्रिभुवन (भूर्भुवः स्वः) तथा तीन देव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश), इन प्रपञ्चों से व्याप्त आपका बोधक है और समस्त 'ओं' पद, समुदाय शक्ति से सब विकार रहित अवस्था त्रय से विलक्षण अखण्ड, चैतन्य आपको सूक्ष्म ध्वनि से कहता है ॥27॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ॥



नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥२९॥

हे प्रियदेव ! [निर्जन वन-विहरण शील], नेदिष्ट [अत्यन्त समीप], दविष्ट [अत्यन्त दूर], क्षोदिष्ठ [अति सूक्ष्म] महिष्ठ [महान्] वर्षिष्ठ [अत्यन्त वृद्ध], यविष्ठ [अतियुवा], सर्वस्वरूप और अनिर्वचनीय कामदेव को नष्ट करने वाले देव आपको नमस्कार है ॥29॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ॥
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

हे शिवजी ! जगत् की उत्पत्ति के लिये परम रजोगुण धारण किये भव (ब्रह्मा) रूप आपको बार-बार नमस्कार है और उस जगत् के संहार करने में तमोगुण को धारण करने वाले [रुद्र], आपके लिए पुनः-पुनः नमस्कार है, जगत् के सुख के लिए सत्त्व गुण को धारण करने वाले मृड [विष्णु], आपको बार-बार नमस्कार है। तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे अनिर्वचनीय पद से विशिष्ट आपको बार-बार नमस्कार है ॥30॥

अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव ! श्रुतिरपि ।
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥28॥

हे देव ! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम और ईशान यह जो आपके नाम का अष्टक है, इस प्रत्येक नाम में वेद और देवतागण (ब्रह्मा) आदि विहार करते हैं, इसलिये ऐसे प्रियधाम (आश्रय भूत) आपको मैं बार-बार नमस्कार करता हूं ॥28॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥29॥

हे प्रियदेव ! [निर्जन वन-विहरण शील], नेदिष्ट [अत्यन्त समीप], दविष्ट [अत्यन्त दूर], क्षोदिष्ठ [अति सूक्ष्म] महिष्ठ [महान्] वर्षिष्ठ [अत्यन्त वृद्ध], यविष्ठ [अतियुवा], सर्वस्वरूप और अनिर्वचनीय कामदेव को नष्ट करने वाले देव आपको नमस्कार है ॥29॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ॥
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥30॥

हे शिवजी ! जगत् की उत्पत्ति के लिये परम रजोगुण धारण किये भव (ब्रह्मा) रूप आपको बार-बार नमस्कार है और उस जगत् के संहार करने में तमोगुण को धारण करने वाले [रुद्र], आपके लिए पुनः-पुनः नमस्कार है, जगत् के सुख के लिए सत्त्व गुण को धारण करने वाले मृड [विष्णु], आपको बार-बार नमस्कार है । तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे अनिर्वचनीय पद से विशिष्ट आपको बार-बार नमस्कार है ॥30॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम् ।
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनीशश्वदृद्धिः ।।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरदचरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।31।।

हे वरद ! कहां तो रागद्वेष आदि से कलुषित तथा तुच्छ मेरा मन कहां आपकी अपरिमित विभूति, तिसपर भी आपकी भक्ति ने मुझे निर्भय बनाकर इस वाक्‌रूपी पुष्पाञ्जलि को आपके चरण-कमलों में समर्पण करने के लिये बाध्य किया है ।।31।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे ।
सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमुर्वी ।।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम् ।
तदपि तव गुणानामीश ! पारं न याति ।।32।।

हे ईश ! असित अर्थात् काले पर्वत समान कज्जल (स्याही) समुद्ररूपी-पात्र में हो, सुरवर (कल्पवृक्ष) की शाखा की उत्तम लेखनी हो और पृथ्वी कागज हो उन साधनों को लेकर स्वयं शारदा सर्वदा ही लिखती रहें तथापि आपके गुणों का पार नहीं पा सकतीं हैं, तो मैं कौन हूं ।।32।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो-
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।33।।

असुर, सुर और मुनियों से पूजित तथा विख्यात महिमा वाले ऐसे ईश्वर चन्द्रमौलि के इस स्तोत्र को अलघुवृत्त अर्थात् बड़े (शिखरिणी) वृत्त में सकल गुण श्रेष्ठ पुष्पदंत नामक गन्धर्व ने बनाया ।।33।।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्-

पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र-
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥३४॥

शुद्धचित्त होकर अनवद्य महादेवजी के स्तोत्र को जो पुरुष प्रतिदिन परम भक्ति से पढ़ता है। वह इस लोक में धन-धान्य, आयु युक्त, पुत्रवान और कीर्तिमान होता है और अन्त में शिव में शिवस्वरूप हो जाता है ॥34॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

महादेवजी से श्रेष्ठ कोई देव नहीं, महिम्नः स्तोत्र से श्रेष्ठ कोई स्तोत्र नहीं, अघोर मंत्र से श्रेष्ठ कोई मंत्र नहीं और गुरु से श्रेष्ठ कोई तत्त्व नहीं ॥35॥

दीक्षादानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तव पाठस्य कला नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥

दीक्षा, दान, तप, तीर्थादि तथा ज्ञान और यागादि क्रियाएं इस शिवमहिम्नः स्तोत्र के पाठ की सोलहवीं कला को भी नहीं प्राप्त कर सकती हैं ॥36॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्-
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

पुष्पदंत नाम के सभी गंधर्वों के राजा, भाल में चन्द्रमा को धारण करने वाले देवताओं के देव महादेव जी के दास थे, वे सुरगुरु महादेव जी के क्रोध से अपनी महिमा से भ्रष्ट हुए तब शिव के प्रसन्नार्थ इस परमदिव्य शिवमहिम्नः स्तोत्र को बनाया ॥37॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुम्
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेतः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः,
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥38॥

यह पुष्पदंत का बनाया हुआ अमोघ स्तोत्र कैसा है कि—सुरवर मुनियों से पूज्य और स्वर्ग तथा मोक्ष का कारण है। इसे जो मनुष्य अनन्य चित्त से हाथ जोड़कर पढ़ता है वह किन्नरों द्वारा स्तुति किया हुआ शिव के समीप जाता है ॥38॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥39॥

सावधान होकर श्रीपुष्पदंत के मुख से निकले हुए पापहारी तथा महादेव जी के प्रिय इस स्तोत्र को कण्ठस्थ कर पाठ करने से प्राणीमात्र के स्वामी श्री महादेव जी प्रसन्न होते हैं ॥39॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥40॥

अनुपम और मन को हरने वाला ईश्वर-वर्णनात्मक पवित्र स्तोत्र पुष्पदंत गंधर्व का कहा हुआ समाप्त हुआ ॥40॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥41॥

हे महेश्वर! मैं नहीं जानता कि आप कैसे हैं। आप जैसे भी हों आप के लिए मेरा नमस्कार है ॥41॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥42॥

प्रातःकाल या दोपहर या सायंकाल में या तीनों काल में जो आपकी महिमा का गान करेगा वह सब पापों से छूटकर आप के लोक में सुखपूर्वक निवास करेगा ॥42॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥43॥

इस प्रकार इस वाङ्मयी पूजा को मैं श्रीशङ्कर जी के चरणों में अर्पण करता हूं जिससे महादेव जी मुझ पर प्रसन्न रहें ॥43॥

इति श्री भाषा टीकोपेतं शिव महिम्नः स्तोत्रं समाप्तम् ।

शिवताण्डव-स्तोत्रम्

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥1॥

भाषार्थ—ताण्डव नृत्य के समय जटारूपी कूप में वेग से घूमती हुई भागीरथी की चञ्चल तरङ्गरूपी लताओं से शोभायमान और धक्क-धक्क शब्द सहित जलने वाली है अग्नि जिसमें ऐसे ललाट वाले तथा द्वितीया के चन्द्रमारूपी आभूषण को धारण करने वाले श्री महादेव जी के प्रति मेरी प्रतिक्षण प्रीति होवे ॥1॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयम् ।
चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥2॥

भाषार्थ—लंकापति रावण अभीष्ट सिद्धि के निमित्त श्री शंकरजी महाराज से प्रार्थना करता है कि जो श्री महादेव जी के जटारूपी वन से गिरते हुए जल के प्रवाह से पवित्र कण्ठ में बड़े-बड़े सर्पों की माला को लटका कर डमडम शब्द करने वाले डमरू को बजाते हुए ताण्डव (नृत्य) करते हैं वह श्री महादेव जी हमारा मंगल करें ॥ 2॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥3॥

भाषार्थ—पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के क्रीड़ा के बान्धव और अति रमणीय प्रकाशमान कृपा-कटाक्षों से भक्तों की घोर आपत्ति को दूर करने वाली वाणी से नग्नरूप श्री महादेव जी के प्रति मेरा मन आनन्द को प्राप्त होवे ॥3॥

जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं विभर्त्तु भूतभर्तरि ॥4॥

भाषार्थ—जब नृत्य करने के समय जटाओं में विराजमान सर्पों के फणों व मणियों की चमकती हुई पीली कांति फैलती है और दिशायें पीली हो जाती हैं तब ऐसा प्रतीत होता है मानो शिवजी ने दिग्वनिताओं के मुखपर केसर मल दिया हो, ऐसे और मद से अन्ध हो गजासुर उसके चर्म को ओढ़कर परमशोभा को प्राप्त होने वाले श्रीमहादेवजी के प्रति मेरा मन परम आनन्द को प्राप्त होवे ॥4॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।

सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरम्
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥5॥

भाषार्थ=जिन्होंने अपने मस्तकरूप आंगन में धक्-धक् जलते हुए अग्नि के कण से कामदेव को भस्म कर दिया, जिनको ब्रह्मा आदि देवताओं के अधिपति भी प्रणाम करते हैं, जिनका विशाल भाल चन्द्रमा की किरणों से विराजमान रहता है और जिनकी जटाओं में कल्याणकारिणी श्रीगङ्गाजी निवास करती हैं ऐसे कपालधारी तेजोमूर्ति सदाशिव हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों सम्पत्तियां देवें ॥5॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियैचिरायजायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ॥6॥

भाषार्थ—जिन महादेवजी के चरण धरने से भूमि, इन्द्रादि देवताओं के मुकुटों की पुष्पमालाओं से गिरी हुई पराग से धूसर (मटमैली) रहती है, जिनका जटाजूट सर्पराज वासुकीके लपेटों से बंध रहा है और जिनके विशाल भाल में चन्द्रमा विराजमान हैं ऐसे सदाशिव हमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूपी सम्पत्तियां देवें ॥6॥

करालभालपट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥7॥

भाषार्थ—जिन महादेवजी ने अपने कराल भालरूपी मैदान में धधकती हुई अग्नि में प्रबल कामदेव की आहुति दे दी जो हिमालय कुमारी श्रीपार्वतीजी के स्तनों पर चित्रकारी करने में परम प्रवीण हैं ऐसे त्रिलोचन महादेवजी में मेरी प्रीति होवे ॥7॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्ध दुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियै जगद्धुरन्धरः ॥8॥

भाषार्थ—अमावस्या की अर्धरात्रि के समय स्वयं ही अन्धकार अधिक होता है और यदि उस समय नवीन मेघमण्डल घिर आवे तो और भी अधिक अन्धकार हो जाता है। ऐसे घोर अन्धकार का भी जिनकी ग्रीवा निरादर करती है अर्थात उस अन्धकार से भी अधिक काली है, ऐसे गंगाधर हस्ती के चर्म को ओढ़ने वाले, चन्द्रमौली त्रिलोकी का पालन करने वाले सदाशिव हमारी सम्पदा को अधिक करें ॥8॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं-
गजच्छिदान्धकच्छिदंतमन्तकच्छिदंभजे ॥9॥

भाषार्थ—जिनके सुन्दर कण्ठ की परम रमणीय शोभा खिले हुए नील कमल की भांति चारों ओर फैली हुई नील वर्ण की कान्ति का निरादर करती है, ऐसे कामदेव को भस्म करने वाले त्रिपुरारि दक्षयज्ञ-ध्वंसकारी गजासुर संहारी अन्धकासुर के नाशक कालान्तक शिवजी को मैं भजता हूं ॥6॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकन्तमन्तकान्तकं भजे ॥10॥

भाषार्थ—सब प्रकार के मंगलों को अधिकता से देने वाले, चौंस

कलारूपी कदम्ब के वृक्ष की मंजरी का रस पीने वाले अर्थात् सर्वकला-प्रवीणकामारि त्रिपुरारि भक्त-भयहारी दक्षयज्ञ विध्वंसकारी गजासुर-संहारी अन्धकासुर के प्राण हरण करने वाले और काल का भय मिटाने वाले महादेवजी का मैं भजन करता हूं ॥10॥

जयत्वदभ्रविभ्रमस्फुरद्भुजंगमश्वसद्-
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥11॥

भाषार्थ—नृत्य करते समय अधिक वेग से घूमने पर शिर में लिपटे हुए सर्पों के श्वास के निकलने से और भी अधिक प्रज्वलित हुई है कराल भाल की अग्नि जिनकी और मृदंग की धिमि धिमि मङ्गलध्वनि की वृद्धि के अनुसार अपने ताण्डव नृत्य की गति को बढ़ाने वाले शिवजी महाराज की जय हो ॥11॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदा शिवं भजाम्यहम् ॥12॥

भाषार्थ—वह कौन-सा शुभ समय होगा कि जिस समय पर मैं पत्थर और पुष्पों की शय्या में, सर्प और मोतियों की माला में, बहुमूल्य रत्न और मृत्तिका के ढेलों में, शत्रु और मित्र में, तृण तौर नीलकमल के समान नेत्र वाली स्त्री में तथा प्रजा व चक्रवर्ती राजा में एक दृष्टि करके सदा शिव का भजन करूंगा ॥12॥

कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन् ।

विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नक:
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्सदा सुखी भवाम्यहम् ॥13॥

भाषार्थ—वह कौन-सा कल्याणकारक समय होगा कि जिस समय पर मैं सम्पूर्ण दुर्वासनाओं का त्याग कर गङ्गातट की कुञ्ज के कोटर में निवास करके शिर पर अंजलि बांधता हुआ चञ्चल नेत्र वाली स्त्रियों में रत्नरूप जगज्जननी श्रीपार्वती जी को भी प्रारब्धवश प्राप्त हुए औरों को परम दुर्लभ शिव-शिव मन्त्र का उच्चारण करता हुआ परम आनन्द को प्राप्त होऊंगा ॥13॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका
निगुम्फनिर्झरक्षरन्मधूष्णिकामनोहर: ।
तनोतु नो मनो मुदं विनोदिनीमहर्निशं
पर:श्रिय: परम्पदन्तदङ्गजत्विषाञ्चय: ॥14॥

भाषार्थ—इन्द्र नगरी की अप्सराओं के शिर से गिरी हुई नीवारी के पुष्पों की मालाओं के पराग की उष्णता से उत्पन्न हुए पसीने से शोभायमान, परम शोभा के सर्वोपरि स्थान और रात्रि-दिन आनन्द देने-वाला जो सदा शिव के शरीर की क्रांति का समूह है वह हमारे मन के आनन्द को बढ़ावे ॥14॥

प्रचण्डबाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनि:
शिवेतिमंत्र भूषणा जगज्जयायजायताम् ॥15॥

भाषार्थ—भयदायक बड़वानल के अग्नि की प्रभा के समान अमंगली का नाश करने वाले, अष्ट सिद्धियों के सहित स्त्रियां जो विवाह कालिक गीत गाती हैं और शिव-शिव यह मन्त्रही है भूषण जिसका ऐसी स्वयं मुक्त भा

हे जगत् की माता पार्वती जी के विवाह के समय की ध्वनि संसार की जयकारिणी होवे ॥15॥

पूजावसानसमये दश वक्त्र गीतं
यः शम्भु पूजन परं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथ गजेन्द्र तुरङ्गयुक्ता
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥16॥

भावार्थ—जो मनुष्य प्रदोष के समय में या पूजा के अवसान में श्री लंकापति रावण द्वारा रचित स्तोत्र का पाठ करता है, उसको रथ, गजेन्द्र, तुरंग आदि से युक्त-श्री शंभु की कृपा से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

भाषाटीकासहितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्
चिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहम् ।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयम्
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालम् ।
गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गंभीरम्
मनोभूतकोटिप्रभा श्रीशरीरम् ।

स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा
लसद्भालबालेन्दुकण्ठे भुजंगा ।
चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालम्
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्
अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशम् ।
त्रयशूलनिर्मूलनं शूलपाणिम्,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः ।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः ।
न यावत् उमानाथ-पादारविन्दम्
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति-सन्तापनाशम्
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ।
न जानामि योगं जपं नैव पूजाम्
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जराजन्म-दुःखौघतातप्यमानम्
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ।

श्लोक :—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये
ये पठन्ति नराः भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।
।। इति श्रीतुलसीदासकृतं रुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः । नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मा, ङ्गरागाय महेश्वराय । नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।1।। मन्दाकिनीसलिलचन्दन-र्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय । मन्दारपुष्प-बहुपुष्पसूपूजिताय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।।2।। शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय । श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।।3।। वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्र देवार्चित-शेखराय, चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।।4।। यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय । दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।।5।। पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव-सन्निधौ ।। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।6।।
इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चक्षारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्री शिव-मानस-पूजा-स्तोत्रम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम् ।
ाना रत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् । जाती-

चम्पकविल्वपत्रसहितं पुष्पं च धूपं तथा, दीपं देव दया-
निधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ।।1।। सौवर्णे नवरत्न-
खण्डरचितं पात्रे घृतं पायसम् ।। भक्ष्यं पञ्चविधं पयोद-
धियुतं रम्भाफलं पानकम् । शाकानामयुतं जलं रुचिकर
कर्पूरखण्डोज्ज्वलम्, ताम्बूलं मनसा मया विरचितं
भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ।।2।। छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनक
चादर्शकं निर्मलं, वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्य
तथा । साष्टाङ्गप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्त
मया, सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण
प्रभो ।।3।। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राण
शरीरं गृहं, पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि
स्थितिः । संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सब
गिरा,: यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवारा
धनम् ।।4।। करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा, श्रवण
नयनजं वा मानसं वापराधम् । विहितमविहितं वा सर्व
मेतत्क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।5

।।इति श्रीशिवमानस-पूजा-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

भैरव स्तुति

व्याप्तचराचर भावविशेषं
चिन्मयमेकम अनन्तम अनादिम् ।
भैरवनाथम अनाथ शरण्यं
तन्मयचित्ततया हृदि वंदे ॥

त्वन्मयमे तदऽशेषम् इदानीं
भाति मम त्वद् अनुग्रह शक्तया ।
त्वं च महेश ! सदैव ममात्मा
स्वात्म मयं मम तेन समस्तम् ॥

स्वात्मनि विश्गते त्वयि नाथे
तेन न संसृति भीतिः कथाऽतस्ति ।

सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह
त्रास विधायिषु कर्मगणेषु ॥

अन्तक ! मां प्रति मा दृशमेनां
क्रोध करालतमां विदधीहि ।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो
भीषण भैरव शक्तिमयोऽस्मि ॥

इत्थमु पोद भवन्मय संविद--
दीधितिदारित भूरितमिस्रः ।

मृत्यु यमान्तक कर्मपिशाचै—
नाऽथ नमोस्तु न जातु विभेमि ॥

प्रोदित सत्य विबोध मरीचि
प्रोक्षित विश्वपदार्थ सतत्तव: ।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे
त्वय्यऽहमात्मनि निर्वृतिमेमि ।।
मानस गोचरमेति यदैव
क्लेशदशऽततु तापविधात्री ।
नाथ ! तदैव ममत्वदभेद—
स्तोत्र पराङमृतवृष्टिर उदेति ।।
शंकर ! सत्यमिदं व्रतदान—
स्नानतपो भवतापविनाशी ।
तावक शास्त्र परामृतचिन्ता
स्यन्दति चेतसि निर्वृतिधारा: ।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं
संविदियं मम भैरवनाथ ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं
दुर्लभ मन्यजनै: समयज्ञम् ।।
वसुरसपौषै कृष्णदशम्या—
मभिनवगुप्त: स्तवमिमम् करोत् ।
येन विभुर्भवमरुसन्तापं
शमयति झटिति जनस्य दयालु: ।।



शंकर स्तुति

1- अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृततादन परिपीडन मरणागम समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर हरमे हर दुरितम।

2. अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते।
शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर ...।

3. भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशंकर शिवजी शंकर ...।

4- शक्रशासन कृतशासन चत्रुराश्रम विषयै
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पित हृदये
शिवशंकर शिवजी शंकर ...।

5- भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं
दयितात्मज ममताभर कुलषीकृत हृदयम्।
कुरु मां निज चरणांचिन निरतं भव सततं
शिवशंकर शिवजी शंकर ...।



अथ जयस्तुतिर्विष्णोः

ॐ जय नारायण ! जय पुरुषोत्तम ! जय वामन ! कंसारे !
उद्धर मामऽसुरेशविनाशिन् ! पतितोऽहं संसारे ।
घोरं हर मम नरकरिपो ! केशव ! कल्मषभारं
मामऽनुकम्पय दीनमऽनाथं कुरु भवसागरपारम् ॥१॥

जय जय देव ! जयाऽसुरसूदन ! जय केशव ! जय विष्णो !
जथ लक्ष्मीमुखकमलमधुव्रत ! जय दशकन्दरजिष्णो ! ॥घोरं० ॥२॥

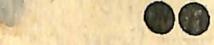
त्वं जननी जनकः प्रभुरऽच्युन ! त्वं पुत्रसुहृद्धनमित्रम् ।
त्वं शरणं शरणाऽगतवत्सल ! त्वं भवजलधिवहित्रम् ॥ घोरं० ॥३॥

पुनरऽपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरऽपि गर्भनिवासं ।
सोढुमऽलं पुनरऽस्मिन्माधव ! मामुद्धर निजतासम् ॥घोरं० ॥४ ॥

जनकसुतापतिचरणपरायण, शंकरमुनिवरगीतं
धारय मनसि कृष्ण ! पुरुषोत्तम !, वारय संसृतिभीतिम् ॥ घोरं० ॥

यद्यपि सकलमऽहं कलयामि हरे ! नहि किमऽपि ससत्वं ।
तद्ऽपि न मुञ्चति मामिदमऽच्युत ! पुत्रकलत्रममत्त्वम् ॥६॥

इति विष्णुस्तुतिः



ॐ ह्रीङ्कारब्रह्मसंस्थापित-ब्रह्मसंवित्-ब्रह्मोका,
ब्रह्मोकात्मैक्यौगीभिरन्तर्हृदि मृग्याम।
कात्यादित्य श्रेणि-समानद्युति पुञ्जां — गौरी —

1. आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां पादाम्भोज ध्यान
परायणं पुरुषाणाम। दूरीभीशङ्गार्द्ध हरं तां
तनुमध्यां — गौरी०

2. प्रत्याहार ध्यान समाधिस्थितयाजं नित्यं
चित्ते निवृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम। सत्यज्ञाना-
नन्दमयीं तां तडितायां — गौरी०

3. चन्द्रापीडानीन्दुतमन्य-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा लंकृतहोहाटकथाश्रम।
इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां — गौरी

4. नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्युवनानि, व्याप्य स्वैरं
क्रीडति यासौ स्वयमेका। कल्याणी तां
कल्पलतानामनतिथाजां — गौरी०

5. मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं, गौरं
चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम,
स्थूलं सूक्ष्मं सूक्ष्मतरं तामभिवन्द्यां — गौरी

6. आयक्षान्तां क्षरमूर्त्यां वितरन्तीं-
म्भूते भूते भूत कदम्बं प्रसविन्नीम,
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां — गौरी०

7. यस्या कुक्षौ त्रीनमरखण्ड जगदण्ड, थूके थूके: प्रादुरभूदद्भुतमेव, यन्त्री सार्धं नां स्फटिकाद्रौ विहरंती — गौरी० —

8. यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला सूत्रे यद्भूतक्वापि चरं वाप्यचरं च, तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां — गौरी०

9. नित्यः सत्यो निष्कल एको जयीशः शास्त्री यस्याः सर्गविधौ संहरणे च, विश्वत्राण- क्रीडन शीलां शिवपत्नी — गौरी —

10. पूजाकाले यावविशुद्धं विदधानो - भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीवाचं वा वाचं सिद्धि सम्पत्तिमुच्चैः शिवधर्मिक तस्य वशं पर्वतपुत्री विदधाति — गौरी० —

"اوم"

1- اوم ناگیندر یارائی - نیلو چنائے - بھمانگلہ راگانی
> پیوارے - دیوای دِ گھمائے - تسمے لنگاری ماہ پیشوارے
2- ساتنگلہ چرماں بھر بھوشنائے - سمتہ گروانہ گنار چنائے
نیلو گھ - ناتھائی پورانتھائے - تسمے مکارائے ماہ شو
3- شیوا موکھ بھوجہ دکا سنائے -
> بھیسی یگہ سی - دناشنائے -
چندرا کہ دیشوا نیلو چنائے - تسمے شکارائی ماہ شوارے
4- وشنو کنھوت - بھوگو نہ سادی -
موہندر دندپائی کر لیشورائے -
شری نیلہ کنٹھائی - ورشا دہ ترائے -
تسمے وکارائی ماہ شوارے -
5- یگہ سوروپائے جٹا دھرائے -
پتاکہ ہتائے سناتنائے -
منایہ شندھائی نرنجنائے -
تسمے وکاری ماہ شوارے



दकज़द छुसय मा'ज्य रछ म्य पानय
मा'ज्य भवा'नी रो'टमय दामान चोनुय
माता दया कर मा'ज्य दया कर
माता दया कर मा'ज्य दया कर ॥

१ चण्डिका छखय मा'ज्य त्रशूदारी ।
राक्षसन करान छखय समहारय ।
माता, अछ थच म्य कोताह वञ्य ब प्रारय ॥

२ आनन्द रूप दर्शुन म्य हावत वञ्य ।
गरि - गरि पननीय सथ म्य थवतम ।
माता, मार् छुस ब गोमुत, छुमय चोनुय शाप ॥

३ शारिका नावस लगय पा'र - पा'री ।
फेरान छखय मा'ज्य चवापा'री ।
पाद चा'न छलय अशिवानि सा'थ ॥

४ अज्ञान गटि मंज वथ म्य हावतम ।
ज्ञानुक प्रकाश म्यति हावतम ।
माता छुसय गुल्य गन्डिथ बोज़ म्योन ज़ारपारय ॥

५ आशाय चानि आसय चा'निस दरबारस ।
क'ल नुमरिथ छुसय इयतनय आर ।
माता, दामान् प्यठ म्य त्राव, मय दिम दकय ॥

६ मुहमायाये छुस ब वो'लमुत ।
काल' शाहमारण नाल वो'लमुत ।
माता अमि ज़ालय किथ वो'ञ्य ब मुकलय ॥

७ आलोकस छुय मन परेशान ।
भक्ति ज़ल छुस शूभरावान ।
भक्ति तिछ थवतम युथ नय डलय ।
मा'ज्य रो'टमय म्य दामान चोन ।
माता दया कर मा'ज्य दया कर ।
माता दया कर मा'ज्य दयाकर ॥

—विनीत

हमारे प्रकाशन

1. सनातनषोडश संस्कार पद्धतिः—पं. भीमसेन शर्मा, संपादक-कृष्णानन्द शास्त्री मूल्य
2. सनातन विवाह पद्धति :—कृष्णानन्द शास्त्री, भा. टी. मू. रैक्सिनजिल्द
3. कात्यायनी शान्ति :—भा. टी.
4. धर्म शान्ति पद्धति :—भा. टी.
5. गण्ड मूल शान्ति :—भा. टी.
6. मूला शान्ति :—भा. टी.
7. आश्लेषा ज्येष्ठा शान्ति :—भा. टी.
8. चातुर्वार्षिक शुद्ध श्राद्ध पद्धति :—
9. नित्यकर्म पद्धति एवं देवपूजा पद्धतिः
10. शिवमहिम्नः स्तोत्रम्—भा. टी.
11. त्रिसूक्तम्—भा. टी.
12. नारायणबली प्रयोग विधि—
13. सन्तान गोपाल स्तोत्रम्—भा. टी.
14. महामृत्युञ्जय जपविधिः
15. कर्मकाण्ड प्रदीप—भा. टी.
16. मन्त्रानुष्ठान पद्धतिः
17. दुर्गार्चनसृतिः—भा. टी.

वुमकार रूप छुख सर्व आकारो
मूला दार ध्यान दारांयो
स्यंदि दाता छुख व्यंग्र हर्तारो ॥
महागणपत ध्यान दारांयो ०॥
सारिनय ब्रोंठ छुय गुड अनवारो
ज़प यंज्ञि स्वाहाकारांयो
वै कुणठ रूप छुख वीदुवुमकारो ०॥
आदि शक्ति हुन्दे आदे कारो
यकि दन्त वीदु व्यस्तारायो
शेव जी स न्देद टाठि व्यंग्र न्यवारो ॥
परम शक्ति हुन्दे सीवाकारो
यछा पोत्रर व्यवहारांयो
बालचन्द्र चूब कासुवनि शूबिदारो॥
सर्व शक्ति माननि आज्ञाकारो
प्रक्रमयामि संसारांयो
प्रथ तिर्थ ब्रोंठ चुय तु पत कुमारो ०॥

नाल्य छुय मुखत माल नागिंद्रहारो
बलु दात गानीशि बलु प्रारांयो
रोद्रय गनु नय हुन्दि सरदारो ०॥
ही लोम्बूदरु सर्व वुपकारो
मुकुलाव मि संसारांयो
लोम्बूदरियै कोरुथ आहारो ०॥
यंन्द्राज्रस यलि खोत अन्दुकारो
ज़ोरन ति गोस लूरु पारांयो
मुकुलोवथन छुख बखशनहारो ०॥
व्यंणन कोर नयं नु नमस्कारो
सोदरस कोरुथ वथु वारांयो
गजु मुख बोयनय जय जय कारो ०॥
वस्तर नाल्य छिय रंगु गुलनारो
चोतुर वुज़ बडि सरकारांयो
चानि दरबारय लबु दरबारो ०॥

Kum
27-9-

मन्त्र नायक ब्रह्म अवतारो
पूज़ हथ गणपथ यारांयो
सर्व स्यद दिनुकुय छुख चु मुख्तारो ०॥
बुलबा सत्य छुय स्व सुरपदारो
अथन क्यथ चोर हंथ्यारांयो
बूतन तु राक्षिसन करान सम्हारो ०॥
अव्यक्तायि सानि दन्त सत्य तारो
मकु सत्य पाफ गाल वारांयो
प द्म सुमरनि सत्य क्रूद दुखहारो ०॥
स्यंह्म यूगु आसनु ज़ोरावारो
धुमर वर्ण संसारु सारांयो
यांमि बुव सरु दित कृष्णस तारो ०॥

---

[२]

बालु कृष्णस छस बुं प्रारान
छालु मारान थियिना ॥

बंसरी छुस कन बुं दारान
शब्द बुज़िथ मतुना
जसुदा छुस पतु लारान ०॥
द्रौपती छुस पान मारान
हान दुर्य्यूधन लच्यम
मान छुम छुस ध्यान दारान ०॥
छुस बुं राधा यन गुज़ारान
नन्दु लालु कुनि मेलिना
अशि कनि छुस मुख्तु हारान ०॥
गारि छिमशुर्य्य बांच मारान
क्यासना रास खेलुना
मेलना तस छुम सु प्रारान ०॥
कुब्ज़ा छुस तालु मारान
नालुमति रटुहन मूहन
मालुकुर छुस पोश चारान ०॥

छस बु लछमी गुण व्यचारान
छुन तस ह्य ग्याख कांह
सुय छु सुख दिथ दुख न्यवारान ०॥
दिवकी छस कृष्ण छारान
कांद मंज़ मुकुलावि म्य
कासि गम छस दम गुज़ारान ०॥
सिवरा छस पोज़ सारान
गर नावय कर ना
बाव बूग ख्यादन बु नाराण ०॥
.ज़ुंज़ दायि ह्यथ ग्रायि मारान
वुछ सुशीला बागिवान
अन कनि आंस पोज़ कारान ०॥
सुय छु बंख्ती रथि खारान
तम्य संज़्ञे पूज़ायि किच़
छस बु तुलसी अरग च़ारान ०॥
किसि प्यठ कोहस छु खारान
मोज वुछ लूकव वोनुख
आसिहे प्रलयुक यि बारान ०॥

पांज पानस छु अथ दारान
मंगुवुन कुस दात कुस
ओर योर पानय बु नाराण ०॥
बावुनायि दुद छुस बु कारान
शाम लाछ यियि च्यंयि ना
प्रेम साफि सत्य छुस बु प्यारान ०॥
दयि नाव ओत पथ छु सारान
क्या बकार यूत व्यवहार
संसार मंज़ क्या लारान ०॥
कृश्ण कृश्णस भक्त यारान
बुव सर दियि तार तस
तारि गांमत्य सुय छु तारान ०॥

---

[३]

कृश्ण छुख मंज़ हनि हनि लो लो
वनि यित मनि रुम्मनि लो लो ॥
सोज़य ब्रह्म ज़न्मुक मंज़्युम योर
पासा यियिय यिख न तु छा म्यं ज़ोर
व्यचार पुछिय, च्यय सत्य अनि लो लो०॥

यूग किस बामस प्यठ म्यं खारनाव
दोह तारु मंज रूब म्य म प्रारनाव
मुख हाव तन लाग ताने लो लो ०॥
काम क्रूद लूब मूहुन श्यंशुपाल
जेनुनि आम ही दीन दयाल
ज़ोरु निम यिम ओरु कनि लो लो ०॥
रांछ्य छिम बानु नस च्यंय निश कृत्य
ज़ोरु निम लांडिथ ह्यथ पानस सत्य
.च्यय रोस्त नतु क्याह म्यं बनि लो लो०॥
शारणागत वत्सल छुय नाव
धर्मस यथ नावस म मंद छाव
वीरु धर्मुय घोन ननि लो लो ०॥
भक्त वत्सल छुख बोड बलवीर
मुकु लाविथ निम कोर्दस गीर
आरज्ञर म्योन कुस च्य वनि लो लो ०॥
अंछ्य लोसम .च्यंय वुछ्य वुछ्य यिम
दर्शुन दिम सत्य पानस निम
युथनु ज़ोह अथ वास छ्यंनि लो लो ०॥

म्यानि संसार यशिकुय मांज मोल
त्रक्क कर ज़ोवराव मुख्तुक व्योल
बक्क कालिनय मुक्क छ्यंनि लो लो ०॥
ध्यान ज़ोमूवन्तस म्यं कास हान
वासनायि ज़ोमूवन्तियि सान
मन म्योन नित वाजि कनि लो लो ०॥
तन सुख मन सुख भाव प्रावनाव
सुख मुख कृष्णस कृष्ण मुख हाव
अख संखिया अख बनि लो लो ०॥

---

(४)

सर्व आकार रफ व्यष्णु वगवानस
सर्व शक्ति मानस छु आवाहन ०॥
वन दीवियि बेछि प्यठ डालानस
सति नारणस छ्यं वन नावन
प्रांवित गथ त्रांवित अभिमानस ०॥
हेरि वछु अछु रछु वायन त गायन
बेछि गूपियन त सूर्य्य वायन सत्य
हीमालु परवत निस देवान खानस ०॥

विगिनि आयि दीदु कन्यायि ह्यथ लारान
बाक्ति बावनायि सत्य मुक्तहारान
वनानि लाजि छुए न्यर्थुए छुएवानस ०॥
यूगिनि नागिनि आकाश मां त्रिकायि
वनुवनि आयि बाजि श्रदायि सान
कांह त्रया रूज़ हु मंज़ प्रस्तानस ०॥
असुनस तु गिंदनेस मंज़ मंशिथ पान गोख
रुयथ बुद प्राए गोख तंस्य कुन लीन
समांज़ सुख आख मंज़ा व्युथानस ॥०
सरस्वती यूमंती गंगा जमुना
स्यंद ह्यथ चंन्द्र बागा व्यतसता
सर्व तीर्थ हयथ छुयं सथ ज़नि कनि स्नानस ०॥
सु प्रकाशि कुंडसुय सूम सिरिय्यि साम छिय
शाम छुय सुबह ह्यथ तन नावान
राथ दोह छोह दिथ तल सायेबानस ०॥
अथ दयि गंच लगहोय पांर्य पांरी
अति आस्य सांरी वन छुन्य थिम
बुद छुय न बातान यिथिस कारखानस ०॥

कृश्ण स्नेह बर शेव नुय कीशव नुय
साविदान मन ब्रेह ग्यवनुय ह्यं
अव णय कर गङ्ग शेव न्यर्वाणस ०॥

[५]

बयि रोस्त थावतम ज़यि सानो
दयि रोट मय म्यं चोन दामानो ॥
ताप मंज़ कोत गछु अन ज़ानय
ब्रोंठ छुम ज़्यूठ स्यंकि मांदानय
न्यथु नंब संदि साये बानो ०॥
मंज़ काण्डि नय प्योस कम ज़ोरुय
ब्रोंठ कनि ह्यम छुस ननवोरुय
अर्ज़ान दीवनि रथबानो ०॥
साद सन्त गय पथ कुन म्यं त्राविथ
हंसु पखु चुय पान वुफ़ नाविथ
ओन तु रोन छुस करान मान मानो ०॥
नाशि रस्ते छुयम म्यं चांज आशुय
अनि सुय अन तु गाटि मंज़ गाशुय
रनि सुय क्युत लदतु न्यमानो ०॥

मन् वुछ तु म्यानिस कर्मस छुन
दर्मस छुय ब्रह्मणस च्युन पुज्ञ
मुकु लांविथ निन त्र बगुवानो ०॥
दर्मु दानु रोस्त छुस कर्मु ह्यनुय
ब्रह्मु ज्ञांज रोस्त दूषु लद ख्यूतुय
यिथि गुणु छुस च्यं वर मंगानो ०॥
संसारस मंज़ छुस लाचार
ब्रोठ छिम वांत्यमत्य कम कम कार
वारु थावतम आमि यामि सानो ०॥
आंदीनन अवतार दारिथ
तारि गामुत्य वुवु सरु तारिथ
कृश्णस ति तार हा दथावानो ०॥

[६]

सुन्दरो वु सुनु सन्दल गरय
हो हो करय श्यामु सुन्दरय ॥
गूपी छुथं प्रारान गुकलय
वेरि सानि प्रारान न्यर्मलय
खेलवं तु मेलय अम्बरय ०॥

लालो वु लुलि ललु नावथो
जिगरस अन्दर वु सावथो
थावथ खांटिथ मनि अन्दरय ०॥
गलि गलि दुद वु चावथो
फलि फलि हा नावद खायावथो
बादाम कन्दु चन्दु हो वरय ०॥
नांल्य मालु खांल्य कनवांली
रंगु रंगु जामु जर्कांरी
शीतल सुवाव पीताम्बरय ०॥
अंतरे पलंग हो आवुयो
पांटयदार करुह वथरावुयो
अंजुल्य दशन मुख्तु हो जरय ०॥
आसन छु चेान कैलास कोइ
बासन म्यं यंत्य छुख राथ तु दोइ
हर मुख के गंगाधरय ०॥
जसुदायि छू नु कांइ वाणिवान
टोठेय यस थिथ्य जु संतान
बलु बंदुर व्यंयि कृष्ण सुंदरय ०॥

[७]

मुख शब्दु दर्शन चाने
आनन्दु गनु टाठि म्याने ०॥
रात वन करान छुस क़यन्तन
च़ण च़ण छुम म्यं ज़ंञ्चल मन
ईश्वरु दूर्धर चाने ०॥
राग चोन युस म्यं छुम मनुसुय
सातु सातु रातस वनु सुय
दुख म्योन च़यं रोस्त कुस ज़ाने ०॥
राजन हुन्दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखिथ म्यं कथाह ओस लाने ०॥
योदवय च़ु म्यांन्य कथ बोज़ाख
दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़ख
चूरि रोज़ यथ गुफायि म्याने ०॥
यंच़ कोल क़यं तु म्यं दूर्यर
कयथु ज़ोरुथ यथ कोरुथ न पूर्यर
अदु कर यि जंट यंलि प्राने ०॥

ओसुस जल वुय न्यर्मल
मूह कंठकंश कोर्नेम म्यं छुख
वचि नम कचि शीनु माने ॥९
त्रेशि हंत्य मनुसुम त्रेशा
अम्रत वर्शुन वु डेशा
गलि शीन अकि कटास्त्र चाने ०॥
कर्मु किञ बीश कत्य दांरिम
गर्दभु वुथि बार म्यं सांरिम
त्रंशिव वेश तुल अलवाने ०॥
काम् नाथि ओतुर कोर्नेस
अम्रत वास्योम वीहु रस
थोप् रोवुम म्यं दानि दाने ०॥
कन थोवुम नु सद्गुर शुद्धन
जर जोनुम रवोत्य प्रारब्धन
कर्मव कोडुस पर्नि छाने ०॥
आंर्तिस चाव अम्रत रस
संसारु निशु वनि मूल तस
थनि नोन अनुग्रहु चाने ०॥

[८]

शुभ लक्षण सारी छियो
शेज तियो वेयि नय जय ॥

(1) सुप्रकाशय परमानन्दय
वन्दुयो जु तय जान
वन्दुयो थिय दुपहांम तियो ०॥

(2) न्यर्मल रुप आशछम चांनी
साफ तनि चानि हुन्द वुन क्याह
मन्दु छावन फुल घुनि हियो ०॥

(3) जन्म जन्मय धारणाये दोरुम
शेव चरणन हुन्द शुभ ध्यान
ध्यान दारुन रुत्य फल म्यं दियो ०॥

(4) अरे साधो गेरा बनावो
सब गाओ शेव लीला
सथ संग सत्य शेवनाथ थियो ०॥

(5) मायाथि वोलनस ज्ञालय
अर्पण करु बालय पान
मुक लांथिय ब्राथ चोन नयो ०॥

कृष्ण जी है तेरा दासी
सन्यासी न्यंष्कल कर
चांत्र बंक्की ल्रस बंड ज़ियो ०॥

६

वेल्र वोत मेलनुक दर्शुन म्यं हाव
प्रेमय सरकी पम्पोश ल्लाव ०॥
अद्वैत रूप ल्लुख कुनुय आसुवुन
अकिय जूति रूप सूत्य न्यथ वासुवुन
छनुय ल्लुख तवय ल्लुय कीवल नाव ॥०
दुयी लक्षण ल्लुख शेव शक्ति रूफ
दुयि त्रांविथ ल्लुख प्रज़्लान ड्फ
दुयि ह्न्दि दयि छिय रूत्य सुवाव ०॥
त्रैयलूक् नाथ ल्लुख व्यवु वन सार
व्यांयि गुण सूत्य ल्लुख करान व्यवहार
व्यं न्यंथर दार वनि नज़राह त्राव ०॥
त्रतुरभुज़ वांतिथ ल्लुख सुवापोर
छुन तरफन सथ त्रवसथायि घोर
छुन वीदन मंज़ ह्व चोन वक्तिवाव ०॥

पांचु मुख आसुवनि दुख शेवजी
पांचन प्राणन पूरख चुय
यांमि पांचुतरनि तार अन दरमनाव ०॥
श्यांयि श्यांयि ब्रांडथ्र लुम चोन लोल
श्यं मोखिस कुमाराजियि सुंद दुख मोल
श्यं अब्बर नाव चोन औशद द्राव ०॥
सथ संग साद नुय हुंद सथ रफ
सति बांदी दुख छुय न केंह छीफ
सथ सदाशयव सत चिय वथ म्यं हाव ०॥
अष्ट स्यद सत्य छिय कर वुपाय
अष्ट दल हृदयस मंज ब्रयं चांज जाय
अष्ट व्यंरण दुख मूखी दाव ०॥
नव्युम गर दर्भुक चोनुय थान
नवदार त्रोपरिथ रट मन प्रान
नव न्यदान बर्य बर्य छिय त्राव त्राव ०॥
दशि बुज नाव चोन नगिंद्रहार
दंहन दर्यशायन हुन्द दुख सार
दंहन यन्द्रयनय म्यंति शोमुराव ०॥

यीकादश रोदर बक्की छय
त्युथुय कर युथ परज़ नावोथ चय
अदु कति राबि आसि काहन गाव ०॥
बाहन बुरजन मंज़ चोन व्यव हार
बाहन यज़न मंज़ चोन व्यस्तार
बाहन सिरियन चोन तीज़ नोन द्राव ०॥
हेरञ्ज त्रवश हुन्द छुख रत्य फल
राथ यन स्यं आस्यतन चांनिय कल
त्रयुदाशि सिरियि आत्भ तिरथ मन नाव०॥
चुदाह रत द्राख .र्च्यय ओस बाक़े बाव
चुदश हुन्दि सामियो म्यंति सुक लाव
पुनिम हंज़ ज़ून छुस स्यं म मन्दछाव ०॥
पुनिम तु मावसि ब्रथ दांयि दांयि
न्यथ कर हय पोशि पूज़ चांयि आंयि
लोल क्यन पोशन करतम क्राव ०॥
कृश्णस प्रंयम चोन यन प्यठ ज़ाव
सीव चांज करने ज़न्मस आव
कांल्य मोलि बावस सूतिन बाव ०॥

१०

ग्यल तय मादल ग्यन गुलाब पम्पोशि दस्तय
पूज्ञायि लागस परम श्यवस श्यवनाथस तय ॥
जटा मुकट प्यठ गङ्गा वसान छस तय
दीवियि तु दिवता व्यंशण ब्रह्मा छिस दस्त बस्तय
बक्के बावुक जय जय कार आंसिन तसतय ०॥
दया सागर व्यज़यायि कंरिन मस तय
हा पोशि मते होशि डंल्य मत्य छि थव ग्यान ह्यस तय
असार संसार छंल रावन सोर रोज़ि कस तय ०॥
पम्पोशि पादव सूत्य यितम अस्तय अस्तय
ग़रनन वन्दय थं जुव जान ह्यथ वांलिज वस तय
राग चानि सतिन पोज़ बुज़यम नाग रादस तय ०॥
पार्य पार्य लगोय ना शोव शंकर शेव नावस तय
दर्शन चानिक्य छ्यम यछ लोल सत्य हावस तय
टोठतम सदा शेव ज़गथ यीशर छुस बेकस तय ०॥
अमरनाथस नील कंठस कल वन्दस तय
व्यज़ार सतिन कृशणस प्यठ आर यियि नस तय
यंछि पंछि सतिन गछि अर्पन ह्यथ बावस तय ०॥

११

कथ कंर्य कंर्य गब म्यं लुकु चार
आर यियिनय शोम्बू ॥
ज़्यूठ सुदरह छु क्रठ संसार
छुस न बोठ तय छुस न तार
यंमि मंज़ म्यं कुछि क्यथ खार ०॥
ब्रोंठ कनि छुम दज़्वुन नार
पतु कनि शोरु अम्धार
यिथि सुय मंज़ छ म्योन व्यवहार ०॥
ज़्यूठ मंज़िलाह कोड म्यं यग्बार
पथ फेरनस छुमन बार
बति प्यठ छुम काल शाहमार ०॥
अति क्याह पाकि म्योन गाटु ज़ार
अति छुस यि यि दरकार
बुफि निम ज़न म्यं जानावार ०॥
खसुवुन कोह तु वसुवुन नार
पतु कनि छुम बोड़ बार
थंकि मुति सुय कर परम्पार ०॥

अख जंगुलाह बुछ म्यं शूबिदार
विहि सान छुस शेह मार
अंथ्य जंगलस छु नन्दनुक दार ०॥
अंथ्य जंगलस छु गुनसु गट कार
अथ लागु नस छुम नु बार
अति दार श्री कृश्ण अवतार ०॥
जन्मन छुन्द कर्म फल हार
कर नाव न्यश्काम कार
दीहु अबि मान मद म्योन मार ०॥
अंज आशा नंज तु नादार
करिहे कम कम कार
नचु बज छुस नंज तलवार ०॥
कोर मुत छुम नु कांह ति रुत कार
नाड़ि कांसि प्यठ बुप कार
दयि गंच सत्य केंछाह म्यं यार ०॥
कृश्णस दितु साद्याथ कार
बारम्बार शोम्बू
.ज्यश सूफार ब्रह्म ज्येठार ०॥

१२

होश दिम लगयो पम्पोशि पादन
हा सादन हन्दि सादो हो ॥
यूगियन हन्दि यूग प्रांनियन हुन्दि प्रान
ज्ञांनियन हन्दि ज्ञानो हो
च्यानि प्रसाद सूत्य स्यद छि तफ सादन०॥
अ.च्य त चानि सूत्य .च्यत कुय चेनुन
नत गछि मेनुन अंजिल्यन पोज
प्रेम ज़ल ह्युय बुज़ान प्रेम नाग रादन ०॥
ब्रह्म ज़न्मस यिथ छुस न ब्रह्म सुम रंच
बुछ म म्यानि राक्षस प्रक रंज कुन
चानि सूत्य भक्त चांज कंर प्रह लादन ०॥
पूरन पुरश छम चांनी लादन
पनुन पान वन्दूहय पादन चुन
नाद व्यंद कन थाव म्याजन नादन ०॥
व्यंज़ार म्यंतरन ज़ांज गाश अन छि अंज
हर हर मुख .च्यय दिम होय वंज
निश्कल मन निश्काम राम रादन ८॥

अनुग्रह चोन गछि आसुन सादन
क्या छु पापन कमन तु ज़्यादन
दय छुख तु रव्यय कर म्यान्यन अपरादन ०॥
कृश्णय चानि कपटनि तालि नेरिहे
अद् कति पांरिहे जामु नंव्य नंव्य
पुशि कति प्यंयि ह्यस हेंज़ान तु रादन ०॥
छोपि मंज़ाय तस छोचिराह बनिहे
अद् कति बनिहे ज़ेछुर यूत
यादय रोज़ हस ब्युनि छुस आदन

१३

नाद् व्यन्द् परमा नन्द् नन्द् लालय
यूकला नन्द् यूव्यन्द् यूपालय ॥
मद् कीत मार् वुनि हा दुद् चूरय
मन् मंज़ालिस मज़ करय यूर् यूरय
पूतना नताकि बालु व्रज़गत पालय ०॥
यादव कुलके माधव रामय
ही न्यर्मल न्यश्कल न्यश्कामय
यूर्य बालु कन सत्य मार वुनि छालय ०॥

राधा कृश्ण न्यय नादा लायय
श्रीधर प्रेम सुर मुली वायय
रोज़ राम बोज़ साम वदि चि तालय ०॥
हृदयस मंज़ वसु वनि न्यथ लसुवनि
अस वनि अस वनि गरुडस खस वनि
नालु मति रटहथ मो दिम डालय
हनि हनि मंज़ आसु वनि वासुदीवय ०॥
रास मण्डुल खेलु वनि कृश्ण जुवय
न्यथ वास वुज़ सथ यमि कलि कालय ०॥
पंकज़ तनि व्यज़ायन्ती माला
तरज़ अकि नालय तय मोज दुवाला
सन्थ छिय वंलिय वसन्त दुशालय ०॥
केशव शेव रप नारायनय
बंज़ दिथ नोन गोख विन्द्रावनय
चोन छोत चोन प्रेम मस प्याज़ प्यालय॥
व्यंदुर जुव नुय गर यंलि चाखय
वावनाथि सत्य रव्योथ सिव सुत हाखय
कति गोख तति कोरवन हन्दि सालय ०॥

द्रोप्तिये आकि कृरुण नाव सूत्य श्यामय
पांदु गय तीत्य तस वस्तर तु जामय
थात्य कंडिस दर्यूदननय नालय
कृरुणस शवे रूप दर्शुन दितु ज्ञय
सुय चय चय सुय कीवल छिव नु जुय
श्याम प्रवात रफ हावतस कालय ०॥

१४

श्याम सुंदर ब्यंह सुंदर जाये
वथ रय मन मथ राये लो लो ०॥
प्राण पवन सूतिन मुचरन आये
नाव दार दीह दारि काये लो लो
व्रंचु गूपिपि ,ंयय वुल्लने द्राये ०॥
बालु रठ नालु मति सूत्य पालनाये
सानि वरुन हुंजि कुष ज्ञाये लो लो
निश्काम स्यद कर मनु कामनाये ०॥
कीवल वंखुड हुंद कर म्यं वुपाये
सूत्य पनानि प्रेमतय माये लो लो
बासदीष वास कर मंज्ञ वासनाये ०॥

राज़ दरस चांभिस ग्यछ.ये
आदीन कर्म हीन आये लो लो
चार कर ग्य आर कन्नि सुशीलाये ०॥
सुदाम जानिथकर ग्य वुपाये
बोलमुत छुस ज़िष्टाये लो लो
छुत्रय ग्योन पूर सत्य पूरणाये ८॥
बान रोस्त द्रामुत छुस गदाये
वूंचमुत दैव संप्ताय लो लो
ब्यंचिकस ग्यं त्राव राज़ हम्सुन साये०॥
फल दायक चानि खल किञ आये
अनुग्रह ग्यं तोल पूरि त्राये लो लो
बोबमुत ग्यं केंहति छुम्न कर्म बूमिकाय०॥
शुज़राव संकट ग्रह दशाये
वुलट समयस प्यठ ज़ाये लो लो
फिर थुर कर च सानि कर्म लीखाय०॥
मारकांडे ज़ान चानि आशाये
आयस मंगने ग्यं आये लो लो
कालस ग्यं ग्रास कर बास जाथि जाथि ०॥

आत्मा राम न्यंवरंच हंजि राये
सत्य पख मर्य शांत सताये लो लो
डंड कर प्रब रंच सपनखाये ०॥
गाल मूह रावनस त क्रद् सनाये
ज़ाल लूबचि लंकाये लो लो
विधीक मन लक्षमनने बाये ०॥
सथ गुन प्रकरंच कोसल्याये
मुख हाव सत्य दयाये लो लो
राज कर आनन्द अजोध्याये ०॥
ज्ञान ताज दिथ ध्यान दारनाये
सत्य सुतन्थरताये लो लो
.ज्यथ तखतस ब्यह ह्यथ समताये ०॥
हुशार रोज़ मंज़ यूग न्यंदराये
ह्यथ समद्रष्टि थीक तायि लो लो
तरया रप मंज़ राज़ सबाये ०॥
अज़ ताज कांत्याह गय कृत्य आये
वतु गभ यथ यात्रायि लो लो
यिक कुस वोत चानि अनेकताये ॥०

क्षीर कंर्य धीरु चानि व्यश्णु मायाये
बडि दयि वे परवाये लो लो
थिम तर्य तु तिम तर्य चानि क्रेपाये
म्यांति तार बव सर आव लुनि जाये
सूत्य बिधीकु घोपाये लो लो
युथ दीह डूंग सूहम हम घाये ०॥
कीशव नाव ज्ञपनाव बावनाये
अज़ा ज़पा ज़फ मालाये लो लो
मन नाव आथ्म तिर्थुचि जमनाये ०॥
राम चंन्द्र चंन्द्र चड लगय धीकु ताये
हांविध चंन्द्र कवाये लो लो
मूह गट कास म्यानि घोज़ मैनाय ०॥
व्यंशु रूप व्यूग व्यूख कर्म लीखाये
सूत्य नाना वरनाये लो लो
शखति पात द्रांष्टि थाव प्यठ निशताये ०
करनी शुर्य्यन हंस गूर्य्यबाये
रास खेलुनि नानि द्राये लो लो
थफ कंर कृश्णनि रागु राधाये ०॥

१५

श्याम सुन्दर मुरली बोलुय
खेलि बना रास मंडोलुय ॥
काचु जून जन चमकान द्राये
वाचु बन्दन याद छुव नाये
याम नायि यंच धारिबे लोलुय ०॥
कव वाजि मन्न छुष जंजालन
लाजि मज्ञ छुव मंज व्यवहारन
शुर्य्य बांच ह्यथ व्ययि मांज मोलुय ०॥
गङ्ग जलय छुंलिबे तनय
कुङ्ग मालिबे व्ययि चन्दनय
रङ्ग रङ्गय वंलिबे सोलुय ०॥
अख छुय राधा व्ययि शुर्य्य कने
आरस मंज छुय न्यथ ननै
मान अभिमान तिमव ति गोलुय ०॥
मोर मुकुट दारिथ छु सुन्दर
अज छु तोशान पोशन अन्दर
वाल्य गोशन नाल्य जङ्गोलुय ०॥

रोशि करुवय पोशन ति मालय
पोशि नूलस डालोस नांल्य
तंम्य वादह इय सोन अज़ा पोलुय ०॥
रास रस क्यथ मते मचय
आधि डुर वन त्रेशे हचय
वाच बन्दन कोरनख मलोलुय ०॥
दीव सांरिय सांमिथ आये
दीव सुन्दर गन्दरव बाये
कतिजि ज़न आस येरान ओलुय ०॥
व्यास नारद अंन्य पंच्य स्ज़िथ
सुर डेलिमत्य सुय सुर बूज़िथ
साज़ सारङ्ग मरदङ्ग बोलुय ०॥
र्थश तु मनी वेथिमत्य छि तपय
लीन गांमत्य ध्यानय जपय
मूह जंगल तिमव ति गोलुय ०॥
चन्द्र भंडक्य लूख द्राय म्यंबर
यवनमक्य पांठ्य तिम वंठ्य पथर
कूरयन बोव मुखतु व्योलुय

तारि गोमुत तारा मण्डल
दीव कनि कन गांमुञ वद्दल
होलु गाजि मञ्ज बंरिथ तु लोलुय ०॥
ॐ कारण पोशे वरशणस
आंस्य हरशस तसुन्दिस दरशनस
लोल करोस लुलि मंज़ोलुय ०॥
प्रांथि कृशणस बर बय प्रती
पांकिवी नेरव तंस्य सत्य सती
कृशण ज़रितन दिमव ज़ोलुय ०॥
साद संत ज़ान बोम्बर बंनिथ
पोशि चमनन तल रूय संमिथ
चरण कमलन हुन्द आव लोलुय ०॥
बंक्रिस ति तिय ओस मनस
गीत वनस जनार्दनस
परमा नन्दुन बुज आस लोलुय

---

[१६]

राधा कृशण गांमय वन
गूकल तु बन्दुराबन ॥

गूकल दीव दारस
व्यांथे यित अवतारस
स्यांज प्रान छिय .च्यं अरपन ०॥
च्यानि ज़्यन ही व्यंशम्बर
सुचूरन आय दारि बर
डीडियवान गय व्यसर्ज़न ०॥
जमुनाथि ओस तमुना
पादन बं मीट्य दिमुना
गांथे प्रसन चाजन चरनन ०॥
गूकल आस त्रांविथ
जसुदाथि निशि सांविथ
वसुदीव अरद रातन ०॥
कन्या पानु दीवी
सुति अंज वसुदीवन
.च्यं बदल ही नारायण ०॥
वंछ्य गुपनन थंलि रांवि
दूरि वनु .चूरि थांविथ
अभिमानु ब्रह्माद्दन ०॥

वंछय शुपन नंज्य वनांविथ
सारिनय तिमय हांविथ
ब्रह्मा आष ह्यथ छु मन्द छुन ०॥
शुराह सास अख हथ त आंठ
छुय आंसुस अकांय टांठ
राधा त ब्यंथि रखमन ०॥
प्रेम बाव रब्यंथथ बुछे
दोथि अथ कोम मुछे
तिम ति अनि सुदामन ०॥
अयचिमि मुछि आथि रख मन
वस करिव ही नारायण
असि ति बुज करिव अर्पन ०॥
अकि नावुक प्योस पास
पांदु गंय सास बंध सास
द्रोपदी नांक्य वरदन ०॥

[१७]

राज़ हम्सा गर चामय
अज़ म्यं द्रामय तमना ॥

बालु बालु पानु छांजामय
लालु मालु छुस नांलिय
कमि हालु छिस सालु जामय ०॥
हनि हनि युस म्य छांजामय
शंहरु गामय आलमस
मनि मंजु बागु बनि आमय ०॥
श्याम रूपु ह्यथ म्य डेछामय
प्यठ बालय शेबु जी
पंरिबी शेबु शेबु रामु रामय ९॥
मनु नागस बाबु सामय
गंडिमय दांरुकि छुलु सत्य
प्रेमु ज़लु हय चमु दामु दामय ०॥
शेबु रामुक बन्यामय
करमु बुतु रांचु बाबु व्योल
सतु .व्यत ज़लु सत्य ज़ामय ०॥
न्यथ हय अर्वयज़ारुचि हालय
नेमु न्यन्दु दिथ कजिमस
हरशु रसु नोनु म्य द्रामय ०॥

अनुग्रह अेह सत्य खामय
पुखत गयि सुखत मुखत माल
चांजिम फिकिर तु गजिम पामय ०॥
कृश्ण न्यंष्कल न्यष्कामय
शेव नामय व्यंश्ण सुर
सुबह हाव्यम मंज़ शामय ०॥

---

[१८]

राम लगुयो राम नावस काम दीव
श्याम सुन्दरो
न्यरवासन गरुडासन व्यंश्ण ज्यंश्ण
कृश्ण गुन्दरो ॥
गूपालो गूपीवल्बो गूवर्दनदारो
गूकल के गुलबहारो गूपियन हुंदि सारो
कर ज्यंय कित्य पोशि गुन्दरो ०॥
न्यरबयि दयि न्यरामयि निश प्रंयि निश कामो
कारि युस चोन प्रणामो दाम चंयि सुदामो
बाव चोन छुम हृदयि अन्दरो ०॥

न्यरबन्दन रघुनन्दन जानकी कन दूरो
रावणस यावुन वालवुन लंकायि कोऽथ लूरो
सुदरस मंज़ पंज़्य त वान्दूरो ०॥
तावु होत बं तांजि तावे लोगनस मायाये
आमु तावन सूर सुरभ सूर कोरनम काये
थंयि तापु छुम तफ तोन्दूरो ०॥
जलु व्यंशणो शेहलावतम ज्ञान अमृत चावतम
थंमि संकटु मोकुलावतम लट लटु मतु दावतम
गाह त्रावतम गटि अन्दूरो ०॥
शंख शंकुर पदम गदा दर मोर मुकुटनय दारो
पीताम्बर ही श्रीधर ही कमस सम्हारो
द्वारिकायि हुन्दि राज़ यंन्दूरो ०॥
परमानन्द ने आनन्द गुव्यन्द नन्द लालो
लक्ष्मण हुस वन्द सुन्द वन्द चटतम खूहु जालो
युथ नु मायाथि मंज़ छुंयन्दूरो ०॥

१६

प्रवाथ आव पोशि नूखो यन
सुन्दर वांणी प्रसन कर मन ॥

न्यंन्दुर मो त्राव यथ वखतस
सत्यायुग न्यूठमुत छु तखतस
यि मंगुन छुय ति मंगबुजक्यन ०॥
त्रेता युग द्वापरय कलि युग
तिहुन्द स्वामी छु सत्यायुग
तामिस निशि फल बनिय बुजक्यन ०॥
छु बुजक्यन दीव लूकस मंज़
करान पूज़ा वनुक संज़
यि यिय नय पछ़ दि कन बुजक्यन ०॥
हतो मन पोशिनूको बोज़
गंछिथ वनहारि गोशस रोज़
म्य ब्रोंठ बूलमुत छु पोशिनूलन ०॥
वज़ान सेतार मुंली नय
करान छिय शेव शोम्बू जय
यिवान छिय वनन दीवय गुण ०॥
छु बुल बुल बोछि मंज़ दिथ ताल
करान गूव्यन्द ही गूपाल
सदा गूव्यन्द गूवरदन ०॥

सांमिथ लांग्य करानि सून्यन्द गू
कुकिल लाजि परानि शेव शोम्बू
करान श्रीराम रघुनन्दन ०॥
छु बुल बुल दपान चर्य्यन हार्य्यन
पांकिव बोजब बरन तु दार्य्यन
दपान ज़ीवन छु बुज़नावन ०॥
छु आम्नद जी बनान राथ यन
म्यं गंछ रोज़ज सतच सुमरण
अदय छयन बनि म्यं अपरादन ०॥

[२०]

यंथिवी संखियव सखरिव वन कृश्ण दर्शुन कंरिबे
सुर मुंली थंबिवे कन कृश्ण दर्शुन कंरिबे लो ०॥
शाम नीरिथ गोम सुन्दन
दुब बांलिज़ छुम फेरन
हुब वन्दहुय दुन पादन ०॥
मुख डंथूडुम पम्पोश ज़न
रोश न्यूनम होश बोम्बरन
नांल्य पोशि माल बांल्य गोशन ०॥

गट कासन यंदर तारन
सास बास्कर तीज़ बासन
मोर मुकट क्या छु शूबन ०॥
मोर ताज दिथ राज कोरबन
बाज लोगुन त्रन बबुनन
दीब ब्योन ब्योन तस छि यीघन ०॥
नाल मति छिस पत लारान
सतिवादी साद सथ ज़न
यछि पनिय प्रावनावन ०॥
मन जोरमुत कन मन्दरन
सत र्य्यश रूब तति गोशन
वुछ त बुज़मल क्या छंय चन्दरन ०॥
कुङ्ग चन्दन कूमल अंगन
रंग रिवनस मल हन हन
हियि बोम्बरस लाग तनि तन ०॥
अंशफ पेचान वंजनस तन
नबकुय सिरियि ज़न चमकन
गाश तमिकुय आकाशन ०॥

दुद् .चूरस लद् खास्यन
शुद् बावनायि हुन्द
मद् ज़ीवसय गछु अर्पन ०॥
बागि बोड क्या छु विन्दराबन
सुर्ग लूकस युस छु गेलन
मांजु मोत म्योन तति छु खेलन ०॥
पूत् नायि दामु
कामुदीवस गयि शरण
सुदाम द्राव वाह जामन ०॥
नन्दलाल द्राव यूवरदन
गूकल् कथन करि प्रसन
परमानन्द प्रावि लछमण ०॥

[२१]

लालो लालो बालु गूपालो
करयो .च्यय किच पोशन मालो ॥
आदन बाजो कन थव नादन
म्यति दित् दर्शन छुम चांज लादन
स्यदन सादन हुन्दि रक्षिपालो ०॥

जुसदाथि हुन्दे श्री गुव्यन्दो
दिवकी हुन्दे परम आनन्दो
वन्दयो दुन पादन कपालो ०॥
शाम लादि यिखना सुन्दर शामो
रग वन्दयो ही नन्दरामो
बंरुथन हुन्दे रक्षेपालो ०॥
वन वन फेरय बंज दिनि नेरय
वन राथ दोरि दोरि फेरय
.च्यंय कुन छुय बुझ कुनि सम्बालो ०॥
दांसी कव कंरथस बुदासी
बंर्य बंर्य छिय हरकिय खांसी
बन ब्रजवांसी छुय म्योन सालो ०॥
ह्यस व्यस रांवनस माया मसनय
रस रस रस वस व्यंशय रसनय
छुम मटि खसनुय मूह जंजालो ०॥
यंन्दरय .चूर आव लांगिथ सुन तय
ज़ांगिथ नियिहम शलवास तय
ल्यांगिथ सुन तय व्ययि मुक माल्लो ०॥

(४२)

माया तीतो छायि मतु रोज़तम
चराचर छुख तु आंरज़र बोज़तम
कांछाह सोज़तम दनि दयालो ०॥
च्यथ आकाशय बास्करु बास्तम
ज़ून प्रकाशस सिरिंयि ज़न बास्तम
आन गट कास्तम रटथो नालो ०॥
परमानन्दुने नन्दु आनन्दो
लछमण जुबने श्रीराम चुन्दरो
सीता सत्य छ्यथ नांली नालो ०॥

[२२]

बालु गूपालु न्यरामये
शामु सुन्दर छुख न्यरबये ॥
बुठ लांयिथ जमुनायि अन्दर
प्यंन्दि हन्दि हीतु ही शयामु सुन्दर
कांली नाग कडनुय छुये ०॥
नटु वर बेशि नांल्य वनमाला
नागु पतने डीशिथ सु चाला
तिमु सार्य्यय मुहस गये ०॥

(४३)

लाजि वनुने तस बालु कृश्णस
मनु मूहनस तस शीशि बदनस
जुब पनुन खरबुन छुये ०॥
कूमल अंग क्या छिय शूबान
मनु मूहनो जुब आसि लूबान
कांलीनाग मारिय .ज्यये ०॥
जांह ति गोमुत छुय ना कनन
कांलीनाग कस सना छि वनन
शेरि बबरन छु अंम्य सुन्द बये ०॥
बगुवान छुख बे परवाये
नाग [illegible] क्थन छु न्यन्द्राये
[illegible] बुनि आदन छुये ०॥
[illegible] कृश्णन
बालु कृश्णन बल [illegible] अंम्य चानि शूबाये
अंगुष्ठा तस प्यठ लंटि [illegible]
थोद वंथिथ गव गरडनि बये ०॥
यिय वुछु तंम्य न्यथर मुचरांविथ
[illegible] का अख ब्रोठ कनि स्वज़िथ
[illegible] सुन्दर दांरिथ मुरलिये ०॥

न्युन ग्रंथ छुम तस पम्पोशि करोर
नाग ज़ागरंच कर्यतोन फिलफोर
पम्पोश ह्यथ सत्य यिति यिये ०॥
नांगिनि तस यिय छुर्य वनांनी
ब्यांशि अम्य सन्दि जीव छि दुज़ांनी
कति छुय तीच चांज शक्तिये ०॥
मंनीश्वर ज़लज़र त थलचर
सनमुख तिम नागस ठहरन कर
ठंहरुन छा चांज शक्तिये ०॥
मन न्यूनम चांनी अस नन
छुख मनोहर सुन्दर त न्यर्मल
गर गछुन जान गछिये ०॥
मांलिस तु माजि प्रछुनय ब्यांज़ी आख
कमसनि ज़ोर योर [illegible] अन्दर
मरफ मख सय [illegible] ही शयाम सुन्दर
कांली नाग कडनुय छुये ०॥
नट वर वेशि नांल्य वनमाला
नाग पतने डीशिथ सु चाला
तिम सार्य्यय मुहस गये ०॥

दोपुस नांग्यजाव चोन आसि फेरान
लुकटि मुख छुय बाजि कथु नेरान
कुशल सान गरु गछ छुये ०॥
क्याजि पानय कालस च डालि आम्व
अकि श्वासु सत्य दीहस गछिय खाम्ब
चानि जुवुक आसि फेरान छुये ०॥
दोपुम्ब कृश्णन वुज खसहांख प्राण
छुस बं वुज क्यन दृशम खोचान
छुयि वुजक्यन न्यंन्दुरि होतुये ०॥
दोपुस नांगिजाव यंलि युथ छुय अभिमान
पानु कोनु वुज छुहन वुजनावान
[illegible] क्याह होतुये ०॥
बालु कृश्णन बल यंलि होतुन
अंगुष्ठा तस प्यठ लंटिस थांवुन
थोद वांथिथ गव गरडनि वये ०॥
यिय वुछु तंम्य न्यंथर मुचरांविथ
[illegible] का अख ब्रोठ कनि रूज़िथ
[illegible] सुन्दर दांरिथ मुरलिये ०॥

कूद् ग्वोत तस वोलनस नालय
हर रपु किञ दिचस छालय
ओस वोलसुत सम्पताथिये ०॥
नांगिनि आस अद् यिय वनांनी
बालु कृश्णस सूर ज़िन्दुगांनी
ह्यतकार आसि वआस यिये ०॥
बालु कृश्णन दीह बंडरोवुन
कांलीनाग दुन्दी सांम्पुन
बन्द फुटस ह्योतुन यसरनये
पान अद् मुकलोवुन दवांनी
कलनय प्यठ छु तस नम्रांनी
सुर वायान ओस मुरलिये ०॥
पादि कमलेव ताल ओस मारान
नवि दरवाज़ु नाग रथ छु हारान
अंछय तस वयाह द्राथि फंट्यथये
ज़िन्दुगांनी हंज़ त्रांवुन आशिय
अद् खुल्योस ज्ञानु प्रकाशय
दय ज़ोनुन ह्यथ मुरलिय ०॥

2525
2525
631
80
5761
100
5861
1000
4861

2525 × 25
12625 = 1
5050
631.25

चोन वजरा छ, वडि वोड मय कर चेर,
त्रन्नीस छि माता सअरी हुल्म दआरि दआरि,
आसि छ, हाजत विज़ विज़ आसि क़न फेर,
आसि छि माता सअरी हुल्म दआरि दआरि

=

① दूरि ग्येठ मआज आमआत आसि छि ज़ारान,
माथि चोन डेडु तज़ आसि छि प्रारान,
नेरतय नेवर जज़-जज़ युवराव तआरि-
आसि—

② वेकस तय वेवस आसि छि ज़ावार,
केनं संचित चंद छआनि अआसि छि नायार,
सवियंज़ तअ आनन्द आसिकर जआरि-
आसि छि—

③ डेकग तोनेत सोनन त्राव नज़रा,
अज़ ~~हस्तय~~ हस्वतय पनीन अच्छअं कमतीरा,
सेज़रा तय पज़रा पि छि अनआवआरि

—

(५) धर्मच त कैमत्त छन आसि ज़ान,
आछ वछ तय गाशि शेस्त छि त पऊ
आयि ~~स्नोस्त~~ सोसान मोख छान नोन वनुछ

(६) ज़न्म- जनमन ग्यूर आव आसि पे
यी वोव तय तो मअज आसि तोन
छख च मात मोर वान क्रोढ वो

(७) मे घ,म तमन्ना वृछछय साछ
परि पूज़े मोख मोख वीज़ अँ व
पून कच्छय चे पायन सिछंय स

(८) पोश मौत अज़ नुकयवन डेडि चानि त
मऊनी ह्येंध पूज़ान छिय चे निशक
छख च दूगा पायन हंगय पआरि-
आसि छि माता सअरी हतम दआरि

ॐ

समिध आमति आँश पिए सअरी,
रानि ब्रअरी कर दया।
पायन ह्रगय पआरि पआरी,
रानि ब्रअरी कर दया,
रानि ब्रअरी वनहअरी,
रानि ब्रअरी कर दया।
प्रासन पद्मय चानि डेउ तह,
ह्रण-ह्रण ह्रम गनान यह,
मन्त्रराव वोनि करनेन तआरी —
आपन केयेप्प ईयप्प केह तय मायह,
हीत मसवह वोंय गुहाव,
शेरि ह्रागय तिम चआरि चआरी —
धूप दीप कोनि पान आह्रवय,
गन वन्ययय चे पादनीय,
अष्टथुज छरव क्षामाकअरी —
गरि मँज छ,सव ओन प्योयुत,
हीट - हरि ईन्ध आयुत,
कोसतम मुँह अंधकआरी —

(5) तुहमुँह छख मअज आसान,
मँज नागस चीय राज्ञिनया,
प्रकेम यिम चोपअरी —
(6) प्रध ममहम छ,य योर चोन,
कासवान छख च आपया, [illegible]
थुतीश्वर नय चरी अदनअरी —
(7) डेकख चोनय छ, गाह त्रावान,
मुकटख मोस्त जात्रार, सास सिय
जोत
(8) संत यूगी त बेंय सध जन,
रम्म रम्म छिय चे पूज़ान,
प्रकेम यिवान चेय ननवअरी
(9) आश चान योर आयु हारान,
थवसर मअज यि तम तार,
मीर वाहतम ये पापीन वअरी
(10) "पोश मौत" छ,य करान ज़ुअरी,
वनहअरी ये गोश थाव,
क्षमा करतम क्षथा कअरी,
रान ष क्षअरी कर दय

ॐ

विल्व तांय मादह व्यान, गुहान पंपोश दस्तांय
पूजायि तागस परम. शिवस त. शिवनाथस्तांय॥

१. जटा मुकट च्यठ गंगा वसान छसतांय,
देविये त. देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्तांय
भक्त भावुक जयजय कार प्रासित तस-तांय- पू.

२. दया सागर तोह विनयायि कोरनस मस्त तांय,
हा पोरा मते होश डोहमात धवध्यान स्यस तांय,
प्रसार संसार छह रावान सोर रोजि कस तांय-पू०

३. पंपोश पादव सात इतम त्रस्तांय त्रस्तांय,
चरणन व. वैं जुवजान स्यध वाहिंज वसतांय,
राग. चानि सातन पोत्र वुन्यम नाग रायस तांय-पू०

४ पार्य पार्य हगोय ना, शिव शंकर शिव नावस तांय,
दंशन वान्युक छिस यच तोह सात इावस तांय,
रोठतम सयाशिव जगत ईश्वर छिस वेकस तांय-
पू०

५ अमर नाथस नीलकंठस कह. वदस त
विचार सतिन "कृष्णस च्यठ आर इयन
यीछ पठि सतिन गछि अपण ह्यथ या

ॐ

धन्यो मुत छुम मनस चोन याव-
जगत माता म्य देशान छाव,
म्य त्रामुत छोह वानन छाव, " "

गत माता च. टेशान छक - भगत संतानन्य वेशक,
छवान युस छोह सति चोन चाव — जगत०

वोह शानव प्यठै वोरय, म्य पुशयेव पानच्यय सोरय,
केवह ~~छोय~~ चोन छुम विक. चाव — जगत०

घुस पज़ किनि स्यठा नाशान, करान छुस पाप घुस
म्य माफ छुय च्य माता नाव — जगत० अनजान,

यम नगरस त्रंदर चामुत - व. चोन डेडि तह त्रामृत,
यम त्रमृत पनुन वे-घ चाव — जगत०

मिस क्या गम यमिस यावर - च. त्रासक ताज यिात-
बर सर
त्र. मुय पोरे कति तस छाव — जगत०

6. वनान छुस वांज छनेयम कत, दतिस तव
छंत जत जे
श्य सतचे प्रेम. न्यथरे साव — जगत ०

7. वनान छुस वीह ताय जारी - धोकुस यून व
प्रार्थ प्रारी,
श्य धोकचार गव, कुंजर वोज त्राव — ज

8. जगत माना श्य संतुष्ट रोज वनान ज
- छुसै वय वो
पनत्र वयगत दयादु छाव — जगत ०

9. व छुस छिय गोंदि चय किन सारान,
प्रियम सान डुंडि त
च. प्रेम. कि याव छिय गोंदि छान -

10. छ, वागवान श्यथ पत्न थ्योमुल, गंडित गुंट
— शरण मोजुत,
छ, स्मराण चोन हर दय नाव — छ

ॐ

मोक्ष. दाता पात. वय - केवह सतुक विचार दिम
गति आसुन ती य्य दिम - योगुक ज्ञानुक सार दिम ॥:

सन्मुख इंत शोस्य तितम द्युतमुत थि छय फीरित ह्यतम,
थक्ती दितम थक्ती दितम - थक्ती इंदु दरबार दिम.
मस्ती शेशस ह्युत मंगय - मत. नचनावंत दित वंगय,
थक्ती कोंगय जामय रंगय - सुय रंग चक विस्तार यिम.
तेह किस जिंविस दज़ुन स्वभाव - चय ज्ञान स्पी प्रग्य हाव,
क्ती इंज रेह प्रज़हाव - अज्ञान शेरस नार यिम.

मतांय इंका ज्ञातम - थावुक वियोषण पाछतं
यिम मोह मद गाछतम - यध थवसरस तार छिम.
थक्ती त. मुक्ती शोंय च्यय - मन क्याजि तत व्यठ
होंय य्य,
थक्ती दितम थक्ती दितम - थक्ती य य्य बारम्बार
दिम.
तुके येद रस्त शिव कृपण राम - त्रासन कोरत
व्यठ परम धाम,
तारन छ, सै च्यय तिरा इनस - जन्यी य्य
बोज प्रांकार दिम.

⑦ मिथ्या पदार्थ क्या संग्रय- तिम योगि वोज्र -
- आसै टंगय
शांत गधा अद शीत सत संग्रय -
इंद्रियाश्व हुंद आकार

⑧ वांसा गयम मिथ्या वनन- क्रय करन -
- रस्त या वेह वनन
घुस लोय फल पेहनस अनन -
- वोज्र ग्रर चिय अनका

⑨ करूणावत्तारम च्यय सोरित, तारम च्य -
- तारस धप करित,
पारस बनावृम शस्त्ररस - नारस करित
- गुहजार दिम

⑩ द्रुयक्या च्य चारून द्योत- वृहन -
द्रुम मन प्रत योगस वेह
द्रुम अर शरव रस्तुय विहन -
शुमरित च्य इन्द्रय

(11) काया द्वय स्यात्री द्वारिका -

त्रय धृक कृष्ण परमात्मा,

मंगन सुधामा दृस शिक्षा - सर्व ईश्वरी -

यकवार दिम ।

~~[illegible]~~

त्रज़ इय छय वरवार वेंय छय फ़ुरसत
ज़ार ख वोज़ी मगनय कर गमन रोकसत
अरज़ी इयेध त्रास, वरत स दसवख
ज़ार वोज़ी मगज्य, कर ~~[illegible]~~ रोकसत

---

① छेनअ गोस इन आस मंज़ गुंह जोहे
मोकहन पाया कुनि छुन मे,
सेंद्र बुंध यनसर तार दिम छम नै
चअनी सथ.

② ओन छ्स गरि मंज व्योमुत सरिर
धक ज़ छ त्रामा वेंय इन्नर छुद,
अनुग्रह पनने छावतम मे रच

---

(3) कर व्याह पिह कोत अनहोन सु सन्यासस,
वअीत सित छम वुधि-वाडि वाडि मार,
सोरि सोरि सूंचि सूंचि गअमच छम दध ॥

(4) चोय मयोन मोह मअज त्राता त त्राता,
चोय नरिख होख छख ज़गत माता,
हाज़ध-हाज़ध हर विज़ हाज़ध ॥.

(5) शेजार चोनय पूशतन में अन्ध-वन्ध,
सन छम में अंदरीय पन पन गोश,
कर दया पननी हर अँ तत्त सत, ॥

(6) मूढ छम अज्ञान आयमान सोस्तुय,
कामन त क्रोधन कअडमिच मे छठ,
शेज़रच त पज़रच करतम में वावध ॥

(7) शेज़तम मे सनमोख विज़-विज़ सनिदान,
"पोशि मौत" डेडि तह चोन संतान,
हायन मे वअनी रनीज़तन पत वप,
ज़ार वोज़ि मअजय कर गमत में राकस

ॐ

त्रास हारन चानि भैरव्याये,
त्रावि नज़रा कमे हीरवाये।

① एक जद्द मआज गरि ह्य द्रासय,
डोंड तह योर मआज त्रासय,
स्पष्ट एम मे चआनि आस आशाये

② कोमफह मआज्य क्षूह एम व्योमुत
गुदरयोमुत कोताह चुनयोमुत,
क्रांजीह पोन्य गोम करत म्योन ड

③ बंद गोमुत व मँज मूँह ज़ाहस,
ह्यरव मूडा एस दर खबरस,
चुज़ नावतम मे मुह निद्राये-

④ सोन सुंदराह छ, क्षूह मआज रांसा
कठिन यबसर कथ पआठ हव तार,
तार तारुम मे पांनन ~~कारमेह~~
वाएगाह।

⑤ धावतम मे पाय मंज़ ताह ह्यदयस,
पआरिमय प्रंग यथ होह जिमरस,
दिम मे अनवआरि पानीत पूजाये —

⑥ शांत निमिह क्रॉत छम मे चअनी,
शुय द्रांष्टि हरन पाप सआरी,
कीत अनुग्रह कास आपदाये —

⑦ वैरागस ध्येठ थपेर मे धावतग,
मंज़ आआनस जगे मआज कासतम,
रोज़तम मे मयेय धयान धारनाते —

⑧ "पोश मॉत" छ,स ब डेड तह प्रासान,
आशाथि चानि योर आस ह्यारान,
गोश धावतम मे छ,म चोन साये,
त्रावि नज़रा कैम ह्रीखाये।

कृष्ण हीही (हिन्दी)

राधे श्याम हरि कृष्ण अरे प्रभु गो
गोपीनाथ मक्खन चोर मदन मोहन ह

① मेरा मन है जमुना जी वृंदावन गोप बेवे
वह है प्रेम अमृत रूपी जहां से माता मा
उसमें नहाओ खेह बनाके बालकपन की चा

② देह भ्रमरूपी शेर को है मद से आँखें ला
उसको पकड़ो खेंचो बांधो मारो उतारो खा
इस सिंह आसन के ऊपर अपना आसन

③ इस तुप पर अर्पण करते है तन मन अन्न ध
सब प्राणों से तुम प्यारा हो न्यारा हो अब
हृय को मोह से मद से प्रेम से दुख से गम
से छुड़ा

4. क्या करे हम को मथुरा काशी गोकुल ब्रज नाथ,
साडी चित नगरी में बसियो तुम ही दीन दयाल
भगतों का तुम पालन वाला तीनों जगत का नाथ—

5. हम गृहस्थ में फँस गये है काटो माया जाल,
फकत तुम्हारा आसरा है एक हमारा हाथ,
"कृष्ण" को शुभ दर्शन देवो, लेवो अपने नाथ—

गोपीनाथ मक्खन चोर,
मदन मोहन हाथ

कृष्ण लीला

विनत बोज़्म च राधा कृष्ण, हाय होह
नाथ बो,
यस्य होता पस्य हीती, कस्य हे हे कस्य हे

---

① च. छ्रुक योगुक ग. आनुक गुह, व छ्रस नाथाव.
कृय बुहवुह,
चय होव रोज़ुन जस्य माबो — कस्य हे हे

② च्य छ्रय पंपोश पाद. च द्रय, वरन्म छ्रस थक्कि
बाग. च छ्रिय,
च. नय डैंशत हृस्य माबो — कस्य०

③ च छ्रखना प्राण बो छ्रस तन, (सहवन
सताचानी छ्रय दोन पिमुह्म
च नय आसक मस्य माबो — कस्य०

④ जहस मंज़ गाड ज़न छस बय,
ब. छस च्यय सति ज़ह्न छ्रव च.
चय रन्स्तुय वोज दय्य मा बो – करय.

⑤ ब. छ्स च्यय ~~मेघ~~ मेघ वर्णस मोर,
रटित छ्स रवोर रासस मंज़
नवय तूफन रवय्य मा बो – करय.

⑥ च्य संवस छस ब. कुमारी ज़न
करन छस बूह्न मशिन इव ह्न,
छ्नय त्रावित घय्य मा बो – करय.

⑦ च. छ्स चंद्रम ह्स, बजोत्न,
कुकुव ज़न छ्स च्य कुन बोह्न,
कुछत नय ऋछि नय्य मा बो – करय.

⑧ च्य "श्रीकृपस" ब छ्स प्रारन,
वितम दर्शन इतम ह्यारन,
च्य रन्स्तुय वोज बय्य मा बो – करय.

३४

विट फोडि दर्शन चाने, सूर मूर्ति सर्प गा साजे
विमयो गोड अशि वाजे, ,, ,,

1) शिव घुक कैलास वासी, शक्ती छय चाज
तीत छय वजान शीन शाजे, सूर मति सर्प गा

2. जीट घुय बंद्रम होयान, हट छय वासुक शोया
गौरी शंकर आने, सूर०

3. मृग शाला घुक वहिपय,
पानस भस्मा महिष
खुर कोस अशि डयक हाने— सूर०

4. जीट घुक गंगा स्नावान, पापव निश
मोकलावान,
यमराज भय चोन माने — सूर०

(5) धय त्रिशूल काह-संहारी, पान धुक-
कल्याण कारी,
चानि क्रोध जग मा फाने — सूर०

(6) नयकेश्वर चोन वाहन, पूर्ण कर मन कामन,
कुस न चोन महिमा जाने — सूर०

(7) रुद्र गण छय चानि संगी, साथि वस्त्री वंगी
कामयेव दोय चखि चाजे — सूर० —

(8) आरति छिय छारान, कोन छिक यवसर
तारान,
प्रारान तन मा प्राने — सूर०

(9) योन्नानाथ सोन संकट,
आवागमनुके चय चठ
इत. गछ रोजि बे माने — सूर०

ॐ

कस्सै सोनि पोशन माह.
अन इंय हाह. सोनये॥

① मय खानेके हाकह वाह, अंसि मय च्यव चो,
च्याहत. च्याह. माहा माह — अज०

② तसुंदुय मय त. तसुंदुय च्याह,
तसं. दे वान कनने आव,
खुँव. चि कुज़ तस हवाह — अज०

③ दूयैर त. होव कोताह चाह.,
मूरे नार छ्म हह वोन,
शुरे पान कांह संग्याह — अज०

④ यंमि हांय होह, सोदरस हशाह,
तंमि खोर हांन दूरस्थान,
सुय रूप आद्या अंत वहाह — अ

(5) तेजोमय युस नूरान,
बिजे बुज़नावन गोम,
करसै शिट्ट पिट्ट हवाह — ब्रज़०

(6) केंह गय एंद केंह रियान,
केंचव एंदव जोहुय पान,
केंह गय आवित च्यवान प्याह
— ब्रज़

(7) दाम सुय हस्त कुनि गुहाह,
काग चि हिय सु छोव्यम ना,
नागस तन तांय रयेन वाह - ब्रज़

(8) केंचव कोड मुह्द प्याह,
कैंचव निशि हावान पान,
केंह गय वर जन गुहाह - ब्रज़

(9) व'हिय्य त मिसं दि होह नाम,
ब्रज़ इंय श्याम सोंदर सांव,
सुय इंय "वासुदेव-नि" साह - ब्रज़०

ॐ

आदार जगतुक कुनुय छ मन्त्र
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।

1) त्रि पंच नयनो हे आदि दीवो,
जटा मुकट छय गंडिध च्य शिवे
चन्द्रार्ध शेखर त्रैलू चनाय—
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

2) चअ नील कण्ठो जटन चअ गंगा
चअ मोक्ष दायक गुसोन्य नंगा,
महादेव अगोचर चअ मंज गुफोय
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।

3) विद्ध्य छय गौरी चअ वीत नाह
वद्ध्य चअ मंपन दुयुय दुशहय,
सहस्त्र सूर्य तेज चअ मंज जट
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।

④ युजन विच्यन हुंज द्यानिध चम मान्य,
हीटस चम योन्य कनि छ्य नाग कान्य,
अगुर रूप चौन इतम दयाये,
शिवाय नमः औं नमः शिवाय —

⑤ अधन चय डाबर चम वीन वायान,
कपाल माला त्रिशूल धारान,
यकतन अभय छुरव दिवान यछाये,
शिवाय नमः औं नमः शिवाय —

⑥ रोद्रुध चय अंकुश खटॉग वोरुध,
धनुर धारन मंज पिनाक वोरुध,
खटॉग पाशे पुरुष चय योरुध,
उयनी डण्डवत करय चय मायें,
शिवाय नमः औं नमः शिवाय —

⑦ वीरभद्र चय सहस्रम - सहस्र चय
गज चम

छः अष्टोत्तरशतयुज वनान चय सहस्रम,
छः शिव तीव्र चोन अकतन दयाये,
शिवाय नमः औं नमः शिवाये,
नमामि कामा अगुर काये,
शिवाय नमः औं नमः शिवाये —

⑧ भवाय दीवो शरवाय दीवो,
भीमाय दीवो सुरान चय जीवो,
छि जीव पूजान चय आव नाये
शिवाय नमः औं नमः शिवाये,
छि जीव रोदान चय सीव काये,
शिवाय नमः औं नमः शिवाये —

(9) असार सदृश्य त्य तार तारम,
अन्नपा गायत्री त्य पान यारम,
वृहद्रुद्र वज्र कुकीमक कु वासनाये,
शिवाय नमः औ नमः शिवाये —

(10) अमर वनावम शिव मांग हावुम,
शिवो शिँव अरपन शिवम वनावुम,
हे आशि तोशो यिनम दयाये,
शिवाय नमः औ नमः शिवाये,
हे आशि तोशो हृगय वज्ञाये,
शिवाय नमः औ नमः शिवाये —

(11) भक्त वज्र चौनुय कटाक्ष चाने,
स्वरूप चोनुय तुपार जाने
प्रयाय भक्तस यिनम दयाये,
शिवाय नमः औ नमः शिवाये

(12) अनाथ बन्धु दयाय सागर,
संसार की दुःखे क्य छह दितग कर,
जगतम दया कर सहित ॐ उमाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये —

(13) चय शंकरस मंज स्यठाद् य रवूवी
न छ्क चम यूगी न छ्क चम नूवी,
मुक्त सु प्रावि युस शिव दारनोय,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये

(14) शिवाय नमा ओं शिवाय नमः ओं
" " " नमः शिवाये -
नमो थवाने नमो थवाने,
नमो थवाने अँ नमः शिवा

ॐ

शुभ लक्षण सारी छियो,
शेव जियो कोयि नय जय ॥

① रूप प्रकाशय परमानन्दय,
~~ब बन्दये [illegible] वपश्चम सिष~~
वन्दयो जु तय जान,
वन्दयो यिय वपश्चम तियो ०॥

② न्यमह रप आराधम चांनी,
साफ तनि चांनि इन्द्र वन वयाह,
मन्द धावन फुह वनि छियो – ०॥

③ जन्म जन्मय धारणाये दोस्म,
शेव चरणन इन्द्र शुभ धान,
धान वारन इन्द्र फह म्य दियो – ०॥

④ अरे साधो गेरा बनावो,
सब गाम्रो शेव लीला,
साथ संग सत्य शेवनाथ चिको-०॥

⑤ मायाचि बोहनस जाहय,
अर्पण कर वाहय पान,
मुक हाविध नाव चोन नयो०॥



ॐ

दक्षज़ द छ,सय माज्य रछ म य्य पानय,
माज्य यवानी रोटमय यामान चोनुय,
माता दया कर, माज्य दया कर,
" " " " " "

① चण्डका छरवय माज्य न्नशूदारी,
राक्षसन करान छरवय समहारय,
प्रछ पत्त य्य कोतर वज्य न प्रारय—

② प्रानन्द स्प दर्शुन य्य हावनयज्ञय,
गौर गौर पननीय सथ य्य धवतम,
मार छ,स गोमुत, छ,मय चोनुय शय

③ शारिका नावस हगय पौर पारी,
फेरान छरवय माज्य चवापारी,
पाय चौन छ्हय प्रशिवानि सांध

ॐ

④ अस्तान गोट मंज वच स्थ हावतम,
ज्ञानुके प्रकाश स्थान हावतम,
घ,सय गुह्य गन्डथ बोज स्थोन
ज़ारपारय =

⑤ आशाय चानि आशय चा निस दरबारस,
बात नुमरिथ छ,सय इयतनय आर,
दोमान प्यठ मम नाव, मय दिम दकय
=

⑥ मुहमायये घ,स ब वोह युत,
कात शाहुमारय नात वोह मुत,
आमि ज़ाहय किथ वोज्य ब मुकहय
=

⑦ आशोकस घुय मन परेशान,
यीक्त ज़ह घ,स शुयरावान,
यीक्त तिघ थवतम युथ नय डठय,
माज्य रोटमय स्थ यामत वोन

ॐ

पाद. कमहन तह व. आशय, करनि चौनिय अस्तुती,
मोह्य दिम कोड़ वर्ग दिमहै यर्ग शिरका यगवती—॥.

१. गोम नेत्रन खून जारी- छुस च्य कुन ज़ारी करान,
यास प्रत्यक्ष कास खारी- आंस छि फापव वहिम.ती--- पाद

२. चाजि आशाय यो, तव आंस- ना उमेद नेरै न. ज़ंह,
या. म्य वर दिम मोह्य. दामुक, नत. छुसे प्राशन यती--- पाद०

३. होह ~~कागस~~ वागस पोश फो छमे, वेर चाने चाये चाये,
शेर नाग याव. कोसम, शोह व. नि कोर पती--- पाद०

४. क्या वनव आंस मंद छेमात्ति, चंद छीन सौदा करान,
कर दया वोन वुछ म. तथकुन- शोम सीत आंस गहिमती.
पाद०

५. चानि गुण विस्तारनुक ताकत- अनिकुस कस वीनय,
छुय च्य नम जय शाम सोदरी- जाम शूयान छि छतो-
पाद०

6. ज्ञान दाता मोक्ष दाता छरव जगत माता च. छरव,
हे यवानी कर व्य वाणी- स्यद्व मुखस दिम सरस्वती-
पाद:

7. पज़ि मन. युस थक्ति वाणी- करि निष्कह रात्र दिन,
क्या छ, संशय तसदि वापत, मोक्ष दाम. कि वर वधी-
पाद:

8. चानि गुण छुस को विचारन, पन ओम. कि स्वारन न
छुस,
अगस.न कि वर योन कुनय कर, नत. छ, आधुर कात वति
पाद:

9. सर्व व्यापक छरव चोपरी, अस छि शरी क्या वुछव,
चन च्य रूस कुस वोज़िज़रे हाव मोख म्यठ परवती-
पाद:

10. कर्म योनन धर्म ह्योनन-कर्तव्यन सायन म. वुछ,
डाह स्यो धम्रथ कर्म. ग्यान प्रक्रमस चानिय खनी-
पाद.o

11. वीह ज़ारी बोज़ विष्णस, रोज़ सन्तुष्ट संवदा,
घुय चय रौशन घ्रस व. तोषण,
च.य.य्य वख्शक्ष ~~ज़क्व~~ नमस्ती-
ष यादि०

(5) मोरुत डेडित्त त्रास -
कासतम वसवास,
वहदीनम् बनात वह — मात

(6) वोतन्स मुँह जाहत - मायाई जंजाह
यह्य गह्यान चेनी हाँकह — मात

(7) साईतस रोज़तेइ मज्य — यई में गच्छ
तिं दित्य मज्य,
प्रावान रीत रीत फह — मात

(8) युस काँह च्य निश त्राव,
मन्य गज़ ह्यत पोज़ काव,
तसबनान युशकिहन इह - मात

(9) पोश मुत हेत कावपोश -
तच्य त्रज़ हाव त्ये गोश,
कहि कहि व्हान शेशकह — मात

ॐ

मंत्री

छम चहान सार्य गांगह - माता चाने डेंडेतह
सौन बनात अई सरतह " " "

(मंगलाचरण)

(1) खेर नागस छेड्य च धान, तुहगुह छक च
निमह वै ~~सम्पर्क~~ ~~अस्तेत~~ ज़ह - माता

(2) मुख ~~के~~ ~~हसन~~ क्याह ~~इसिवचार~~ - (शृंगार)
मुकटस मकत जाहार,
रंग रंग पोमपोश इह - माता

(3) शेरस ~~के~~ ~~हसन~~ सवार - ~~वध्यवध~~
साहान ~~वध्यवध~~ कार;
सेव आन्दन मंगह - माता

(4) ~~वध्यवध~~ छिम चे माता -
दस्त बस्त सौर्य चन्द्रम अई देवता,
~~चक्रम~~ यूरय ~~विधान~~ ~~ध्यात~~ बुज़ मह,
ध्यान
शनि - माता

(4) हीत २ फ्यूरस ह्याप यत. कामन, शहरत त. गामन वीत त्रासि यार-
ष्ठ्रव पानात्र मिन. ष्ठ्रव त्राकाश यति—

(5) निवासन वनत. कीत चोन त्रासन,
त्रन्धकार कास्तम वन्दयो ~~त्रमी~~ प्राण,
करनम सोदि वाजित्र हिश वाशमीत—

(6) कल्पनाय रासत्यो कत. हे वन्य को.
कीत वाजि रावत्र पान्यन्यर त. नेह
वोत्त कोत्र "विषणस" वीत्त त्रर्थत्राष
मीत—
ष्ठ्रम

ॐ

प्रात: काह त्राव म्यति प्रतत. गारु मति
छम वाज त्राश मति पुरण कर।
हटि मुख हाव मोह. गटि करत. नाश मति
छम वाज त्राश मति पुरण कर।

① जन्मादि जन्मन गुर नाम फेरान,
छुस हाटि हारान डेशन कर।
जह हाव मुख पतन छयन. बरदाशन मति-

② थकित थाव. सतिन वति चाजि नेय,
वति छुख त्रासान पैगाम सोज़।
नत: दिम पन-नुय प्रोन वादाशन मति-

③ मोह गटि मंज़ छुस वध छयन ईवान,
सत्गुर हावतम सतनिय वध-
वध हाव नोन त्राव सूये प्रकाश
मति —

(9) हंस द्वारय वार: प्रज नोवुम -
प्रारि प्रारोस रास रादन,
वच्च सार: पान सर: कर नोवुम - हत

(10) प्रधवासय रास खेत नोवुम,
श्वास उश्वास नोन घ्यासान,
सास 'यास्कर विकास यासनोवुम -
हत

(5) होहि मंजीह हाह-हह-नोवुम-
बोह नोवुम सुबह शामन,
चीयी सोवुम सुहि वुज़-नोवुम- हह-

(6) ज़ीर खम-क्युय सीर वुन नोवुम-
फेर नोवुम तीत हेरे बोन,
वेरि तीमसंजि शेर वान-नोवुम-ह

(7) ज्यव नार-सीत वार-छेह-नामम,
नव-~~नोवुम~~ होहुन नार शोहन,
प्रीछव वूजुस ~~कवस~~ क्रनव वुह नोवुम-
हह

(8) कंद नावद प्रारद ~~नोवुम~~, नोवुम-
फद करित यूयि प्रनतन,
प्रंद होवमुत वोंद फोह-नोवुम। वह

ॐ ओ३म्

पोत्तज़ूने मोत सुह नोवुम, हह नोबुम नारायण

① प्रीय त्त मर्सांज इंथि त्तन नावम -
पोश वधरस प्यठ गोशन,
रोश इंथि ना हेश राव, रोवुम - हह-०

② वाह पान तसपत राव रोवुम,
हाह कमि सुय नाह रदहन,
सिव शय्यो शून्य वोह नोवुन - हह०

③ काम देवस नाम ज़ेख नोवुम,
पाम धविनम कर डेशन,
रन्म रन्मै राम रम नोवुम - हह०

④ दूर पन दूर वार वुध नोवुम,
ज़ीन छोंडुम मंज़ तारकन,
मारकन मंज़ हाह उहसोवुम - हह

(2) शिवाय नमः ओं शिवायं नमः ओं,
" " " नमः शिवाये -
नमो भवाने नमो भवानं, नमो भवाने
ओं अं नम शिवाये ।

(3) रोदध ट्वें अनकुच, खटांग दोरूध,
खटांग पशवे पुरूष- दोरूप्य,
दुज़न बंधडर केरिध ट्वे माये--
शिवम्

(4) असार सोदरस ट्वे तार तारूम,
ज़पा ज़प गायत्री पान,
यास्म वेनिसब कीमन कुवासनये-
शिवाय ०

7. हेटस योनि कनि च्य कटिय नागय,
वुन्ज वीद च्ये टय कटिय, ~~कमय~~ नाग
अगूर स्य वोन यितम दयाये,-- शिवाय

8. अनाथ बन्धू दया सागर,
संसार की दुःख च्ये चय दूर कर,
जगतस दयाकर सहित उमाये-- शिवाय

9. ही शिव नाथो च्य पाप गाहत,
जन्मादि जन्मन हन्द पाप संवारत,
शुयाय भक्ती यितम दयाये --- शिवा

10. अमर बनावुम शिव पान यास्त्म,
शिवे शिवुय वन शिवुय- बनावुम,
च्ये आश नोशे यितम दयाये-- शिव

11. यवाय दीवो च आदि दीवो,
मीमाय दीवो सुरान च्ये जीवो,
छि जीव रोज़ान च्ये सीवकाये --- शिव

1. आदार ज़गतुक कुनुय छु मधर,
शिवाय नमः अें नमः शिवाय

2. त्रिपंच नयनो हे आदि देवो,
जटा मुकट छुय गांडत च्य शिवो
चन्द्रार्ध क शीखर त्रय तूननाये ---शिवाय
च्यें

3. च्ये नील कण्ठो जटन छि गंगा,
च मूरिव दायक गौरयोन्य नंगा,
अटक अगोचर च्ये मंज गुफाये --शिवाय

4. विहिथ छि गौरी च्ये सत्य नाम,
वीहथ छि सर्पन दुख हत्युय दुसह,
सहत्र सिर्यं तीन च्छ मंज नटार ---शिवाय

5. वेहिथ च सद्धम सेज़ित चम,
अष्टा दशा कुन वनान च्ये,
सूक्ष्म नयामि गाये अगुर कायाय --शिवाय

6. अधन च्ये डावर च बीन वायान,
कृपाह माला त्रशूह दारान,
दिवान च्छ वर छुक अभय या

(7) आवत्तीन गंज गाज्य मुकहावत
कुछ रूहथई घुध धाम चावत
प्रय भोग सुख सामयोग ध्यानो
आरे

(8) ~~अरे~~ गोमुत घृमय नीलकण्ठ
अधय अरज़ी करतय मय दस्त
छेम अधस कयध और कुस ध्यान
करी ———

(9) अरज़ी दृयध प्रायमय दोम पाइन
कन चावतय ध्यानन फरियादन,
पाप गहनम ~~ब~~ नपोन — करि.

ह्यम वसान माज्य आशने दारय,
माज्य बोज़्तय मय ज़ार पारय,
इतय साधा त रोज़्तय दार य्यो,
करी—

(5) ज़ात हारि २ हुकचार म्य रोवुस,
बुजरन माज्य वआनि पान म्य
रोवुस, ह्यस गवान शीन जन
यानें २। करे.

(6) वातुक ह्यसय आहव स्य
चोज़्तय, सुख मोरम्य सतमुरव
मय रोज़्तय, पर त पानय
शुर क्या ज़ाने! करी—

ॐ

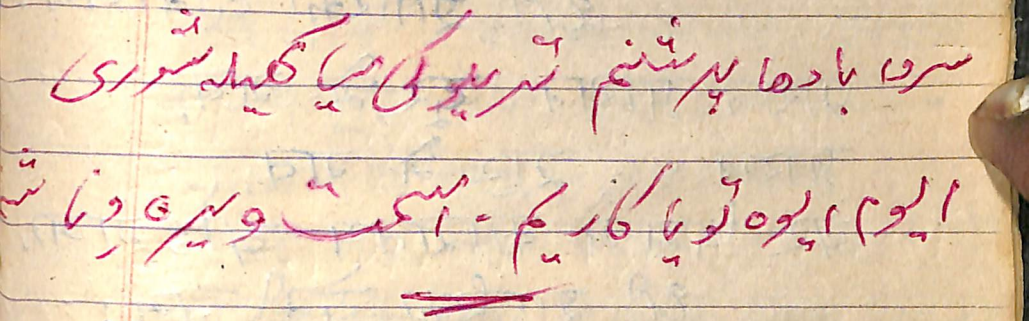
(1) आयस ह्यारान त्राशावे च्यानें,
करी दसखत्त मजी ज्यानें,
खाक महिधई योर दस्तय त्रामुच
डेड्ड च्यानें तत दस चामच,
च्य रोस्तय कुस त्ररवा न्य मा

(2) संसार कूठ व्यहारा, सनी खो
सोन छस न कुनी तारा,
त्रन्त अमीकय कुस उरवा ज़ो
करी दसखत ज्यानें।

(3) कार कूठ स्योम छस माज्य य
~~छस्यन~~, समया गोम यात
माज्य प्रारान,
त्रानगट छेम त्रछ्छ गयम को
कर

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।

एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।



देवता बोले हे सर्वेश्वरि. तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की सारी बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो॥

सन्ताप नाशन पावनस, वासिक
वे सेवि मेज सोवनस, पापव वे
नेन्द्रे पोवस्स,
श्री शारिका देवी नम:

प्रारान प्रारान दूर मे गव,
प्रारान ~ सूर मे गव,,
वर धम मे कारतय वोउ गमा,
श्री शारिका देवी नम:

सरवरक्षारी यक वार धिय.

चय क्षय करान प्रपराधनय, चय मोक्ष
संदेन सादनय,
वनधव व मस्थान्वन नादनय,
द्री शारिका यीवी नम:
युस चान डोड गव मन्यअन्दर,
नम्य नोव संसारक बंधन, संसार
सोख्य खूठ चेन, द्री शारिका यीवी नम:
रछतम बे छुस बास्य प्रन्यर,
येमि नार मंज़ कडतय न्यखर,
रछतम छेछुस रछान माता वंनन,
द्री शारिका यीवी नम:
प्योंमुत बे छुस कन्डय ज़ हसय,
गोमुत बे छुस वश कालसय,
कालुक सस्फ छुम नालसय,
द्री शारिका यीवी नम:
रछतम वस्स तह छुस शरण,
प्रासय शरण रिग्मय चरण,
रिग्मय चरण प्योसय परण,
द्री शारिक यीवी नम

गुच्य गंन्डिय घ,सय मंगान शंकर
कुनुय बर, सनमोख मागितस
मारितस दयाकर, यनसरस तार मे
हनम जिमवारी,
ही सदाशिव शंकर त्रिशूलधार
पाप शाप कासतम वेयि ताचारी,
ही सदाशिव शंकर त्रिशूलधारी
सोये सोये शंकर घदंर वछ मे धर,
येमि कहिन यवसर किध प्रपोरन
घ,स गहान हीन हीन, यी व्यचाये
व्यचाये, ही सदाशिवशंकर त्रिशूलधारी

वे कौताइ वनाय क्याइ वुन्युकताम मैं
गुज़रयोम,
करख त्राहि त्राहि दंदस तन घनरवज्य
वे पेठय पेही वोन्य वोज़तम ज़ापे ज़री
ही सदाशिव शक्कर त्रिशूलधारी।

यन ग्रास जन्मस तन गोस येसवन्द,
गघान घुस यिवान घुस ज़बान घुसन
काँइ न्त्र प्रद, मोकतन पाय ज़न्य,
गयि नेरनव न वरी,
ही सयाशिव शंकर त्रिशूलधारी।

क्या गयी कम शंकर दास में गन्ज़राव
येमि यवसर तार म्यान्य फुरमचयिनाव,
तार हांज़ वनिघ कास्तय मे दुशवारी,
ही सयाशिव शंकर त्रिशूलधारी

ॐ कोफूर रंग, सफेद दयाय छुद छु अवत
समसारुक सार, वासक हटि छुय-हार,
हृदय कमलुन मंज़ फेरुम वारस्वार,
यवानी सहस प्यठ छु, म्योन नमस्कार।

गट में कासतम बासतम चोपारी,
ही सदाशिव शंकर त्रिशूलधारी।
आसह न पनसम्रवत तेहि न मोसूस परबाये,
पापन हन्दि वारि छम गोबेमच काय,
येमि वापथ छम अन्दर बेकारारी,
ही सदाशिव शंकर त्रिशूलधारी॥

कनन गोम कुतुय योर बे मासय बरसत
कुजिम योर कुनी योर ब मासय बरसतब
रछा मरब में कुत रोज़कन यायें वारी,
ही सदा शिव शंकर त्रिशूलधा
गट ——— . , बेन्ध्या ज़वो जति
ले तगय पोय पोम—

۹- گل گنڈت آت گد - لایان ڈیڑھ ٹل سدا -
پچھ او سبزین ملاری - ساجہ راگنا کھوری

۱۰- کدنے مہ کونا نزہ - کدس بنم سنزہ - سنزہ
لوشس بہ پیراری پیراری - ساجہ راگنا کھوری

۱۱- منڈ چوس آدین سیب - راجدانی رچھم
چوشہ کاوڑ پکاری - ساجہ راگنا کھوری

۱۲- آرنی مہ آش چہ چھم - اُن مہ چوشس گاش
کاسم اندکاری - ساجہ راگنا کھوری

۱۳- بھگن بوسرنار - پوشس حت کران دیل زار
رچھم بیٹ پی ساری - ساجہ راگنا کھوری

पौरा अरव व्य कृन शरण भाव, मीन मंज स्थ्य भाव
नरवनाह पावनश्री - साज राशि यवानी
पोजभाव

سونی کلان کاری - ماجہ راگنا بھوانی

سونی گم تہ خاری - " " "

سیرس پیٹھ چہ وہن - بکھوش چوتے آسن -

راجہ رانی خما کاری - ماجہ راگنا بھوانی -

منڈ ناگس چوئی تے تھان - تولہ تولہ چھپ چی آسان -

شوبہ دین تلک داری - ماجہ راگنا بھوانی -

علمہ چانی کیہ چہ شوبان - ~~[illegible]~~ کیہ گاہ پیزان

جولہ چانی ~~[illegible]~~ کاری - ماجہ راگنا بھوانی -

پھیر کھاند ماگر نند تھال یت - وانان بھکتہ چھپ پور -

چپ کران تاری - ماجہ راگنا بھوانی - چی نیت

پیر کرم دیوان چوپای - تولہ سان ~~[illegible]~~ تھ داری

بوزان دیل زاری - ماجہ راگنا بھوانی -

ولوان چی تولہ سان - ماجہ بیہ بی کمی پیر سان

سمت ~~[illegible]~~ ساری - ماجہ راگنا بھوانی

~~[illegible]~~

پیرتھ آتھم چوئی چوان - ~~[illegible]~~

مائی چانی نند اری - ماجہ راگنا بھوانی چی بھکتہ الوان

کو -

ॐ

1. ग्रीरनि रंग गौम श्रावण. हवे।
कर इये दर्शन दिये॥

2. श्याम. सो.दर पामन इनिस
ग्राम. तावह कोताह गनिस
नाम. पैगाम तस कुस निवे--कर

3. क्रंद नावद ग्राख्द मुनय
फंद कारित बोहुम को, वुय
खंद क'र्यनय वूकन दिये-कर

4. सुति वो.धवो संगर माहन
ताह. धारोन कोहन न. वाहन
प्रारान धस व. नहं.इ जिये-
कर ——

(18 ...
- ...

ॐ

वंद कोरनस व. वाशे - जगत. चि वाह
मो कत्य चानि आशे - शिव नाथ. अविनाश

यात नाही

1. शिव. सतिन द्वमायो, हर मुख. वनि दिस
मोह गरि हृदि गाशे ... शिव०

2. कैलास. कोह, ध्यारत, धारणाय ध्यान ध
सत चित्त आकाशे ... शिव०

3. जप. शवनम घोरे, पपि व्योम तप.
कांद फोह गठि न. हाशे — शिव०

4 शंभु नाथ. साधय - आवाहन. नाद
मानि वोज शुद्धि शाषे — शिव०

5. तार दिग मोह. वावस, मायाचि दोर
कड युरव. नावि पाशे — शिव०

~~चार दिवस~~।

६. संसार के सत्य को हर. नाव.,
सति नरै को
कास संकट बि नाशे – शिव० –

७. कृष्ण स जांप चानी –
करुशुस पाप प्रानी,
शापन कर च. नाशे – शिव०

व्याप्तचराचरभावविशेषं चिन्मयमेकमनन्तमनादिम् ।
भैरवनाथमनाथशरण्यं त्वन्मयचित्ततया हृदि वन्दे ।।१।।
त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं भाति मम त्वदनुग्रहशक्त्या ।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।२।।
स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे तेन न संसृतिभीतिकथास्ति ।
सत्स्वपि दुर्धरदुःखविमोहत्रासविधायिषु कर्मगणेषु ।।३।।
अन्तक मां प्रति मा दृशमेनां क्रोधकरालतमां विदधीहि ।
शङ्करसेवनचिन्तनधीरो भीषणभैरवशक्तिमयोस्मि ।।४।।
इत्थमुपोढभवन्मयसद्धीधितिधारितभूरितमिस्रः ।
मृत्युयमान्तककर्मपिशाचैर्नाथ नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।५।।
प्रोदितसत्त्वविबोधमरीचिप्रोक्षितविश्वपदार्थसतत्त्वः ।
भावपरामृतनिर्भरपूर्णे त्वय्यहमात्मनि निर्वृतिमेमि ।।६।।
मानसगोचरमेति यदेव क्लेशदशाऽतनुपापविधात्री ।
नाथ तदैव मम त्वदभेदस्तोत्रपरामृतवृष्टिरुदेति ।।७।।
शङ्कर सत्यमिदं व्रतदानस्नानतपो भवतापविनाशि ।
तावकशास्त्रपरामृतचिन्ता सिन्धति चेतसि निर्वृतिधाराः ।।८।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं सविदियं मम भैरवनाथ ।
त्वांप्रियमाप्य सुदर्शनमेकं दुर्लभमन्यजनैः समयज्ञम् ।।९।।
वसुरसपौषे कृष्णदशम्यामभिनवगुप्तः स्तवमिममकरोत् ।
येन विभुर्भवमरुसन्तापं शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।।१०।।

ہو بیڑہ مل ٹرائی - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگئی -
ٹھ آٹھم چوئی لگان میلدی - لوک وساں پور لوئی -
ن کئی وانی منڈ مانگئی - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگئی -
ولہ حولہ ناگی منڈ چون ہسن - بکن دکھ دیرہ کاسن -
پھولاں دِل کوئی بھاگئی - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگئی -
شیر منڈ لکی ساری - لاران ہائی منشوری -
ن بلمن چھڑ توی راگئی - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگئی -

لمن بہران پھرہ کھنڈ ٹھالائی - کبھی کران ڈپ پگین سالئی -
پھولاں دِل کوئی بھاگئی - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگئی -
لت چی پیراں ڈیڑھ مل - مشکل بن سائیں کرتہ مل -
پھول پھول یان آمنہ کی باغے - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگی -
بکن جھم جانی آ شی - انگ گھا منڈ گاشی -
لگیو میانہ پیرہ لادے - مینہ میانہ ٹولہ حولہ ناگی -
بکی بکت چی کراف ڑاری - گھ گوسی ماری -
لگیو پادنا پاری - لگیو میانہ پیرہ لادے -

ॐ

लीला

ह्यमयो बरह् तल जागय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
चित्रह् प्यठ छुय लगान मेलय — मगरस तान्य छुय वेलय
तोत कुस वाति मन्ज माघय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
जन्गलस मन्ज चोन आसन — भक्तन दोख देद कासन
छुख फोलान दिलकुय बागय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
काश्मीर मण्डलक्य सारी — लारान आयि ननवारी
छुह तिमन चोनुय रागय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
कॅह भरान खिरह् खण्ड थालय — कॅह कराब जफ यज़ीन सालय
छुख फोलान दिलकुय बागय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
भक्त छिय प्रारान डेडि तल — मुश्किलन सान्यन करतह हल
फोलहान आशिक्य बागय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
भक्तिस छम आन्य आशा — अन्तम गटि मन्ज आशा
लगयो म्यानि प्रह् लादय — मनह् म्यानि कारकूट नागय
गुणवती छय करान बारी — कासतम गम गोसीह सारी
लगयो पादन पारी — लगयो म्यानि प्रह् लादय
ह्यमयो बरह् तल जागय — मनह् म्यानि कारकूट नागय ॥

چک چی اُس وی گیان پی۔ دکھی پشردی دانا۔
میرش پتنی یوگ آرت۔ ماجی چاوان وکتن +

بی بیروی چک چی ماتا۔ باپ موچن چنڑی کا۔
ف زدی خوف زنمک۔ ماجی کا ساں وکتن۔

شول ستی کھڈک ماتن۔ ماجی رچھوں بکتن۔
ار ماتن پنوئی کنو۔ ماجی بوزان وکتن۔

رنگ رنگ ماجی تنگ آستی۔ از باکوح ڈک چون۔
یان پوشرت چی بہار پن۔ ماجی گنڈان وکتن +
وای وای ماجی پوان۔ دکھ نہ دیر ماجی بھاوان
سر نڑاوان تل پادن۔ ماجی لوٹھان وکتن۔
سچ وتل کھچ زنیچ ماں۔ وچ وچ کران نیم زان
کیہ نگل پھر مکا بجا تن۔ ماجی چاوان وکتن

سورۃ سمپرا داد ہی دوا۔ ماتی بگران وکشن
دادن دوا روگی شفا۔ ماتی بگران وکشن۔

۱۔ کیا چو گم پس نکھ اسک۔ سپہ لنی منٹکن
میری گمین بو ساگرس۔ ماتی ناران وکشن

۲۔ پورو پچم کن دکھن اتر کی۔ ماتی رچھوں
اسونی مکھ خوشی سیس۔ ماتی بچھران وکشن

۳۔ گل گنڈ آمت گدا۔ لایان ڈیڑھ ل سیر
گیانک لوہ پنہنی الو۔ ماتی بچھران وکشن

۴۔ ساس بہو نری پس چھی دارونی۔ رچھونی
کھن کھن ماتی کرم مائن۔ ماتی انران وکشن

۵۔ پس کران چک پر دیشی۔ وچی کتی
مشرنا گتی روگی دامان۔ ماتی نراوان وکشن

दुछि दुछि भाव पम्पोश/माज्य चरणन ब भावहाय
छुम म्य कूत च्योन अनुराग/सीन मचर्यथ ब हावहाय। १। दुछि
माज्य म्य दिखना च अनवारि/छरि म्य गछहान अशिटारि
अशिवान्यि शेरि गंगजल/दारि दारि च्ययि व त्रावहाय। २।
प्रेयम जल मुख ब छलहाय, मलहाय भाव अनुराग अनुराग,
चूनि ज्यरि ज्यरि ब आसन तोसकियि वथरावहाय। ३।
हृदयिकिसि भद्रपीठस प्यठ ब चयि ब्येहनावहाथ
शान्दकनि अन्तःकरण मखमलि डखि थावहाय। ४।
दहि रंग दह यन्द्रियय पाँछ पाँछ बुथि शेरहाय
पारहाय रुनि गुडकरि पादज्यूरि फुलरावहाय। ५।
धूप दीप कनि देह त प्राण आलवहाय च्ययि व अन्दि अन्दि
व्यन ज्याफरि त पोशगुन्दि वारि वारि पुशरावहाय। ६।
खुल हटि बोजनावहाथ पाँछस्तव त सास नाव चयि
वाहन ह्यथ च्योन स्थान लोलनाद ग्रजनावहाय। ७।
छुस ब छुर छिम न धन त द्यार क्याह करय ब पेश उपहा
चय हाय छिख म्य माज्य डखिदार पुत्रतोन नेशनावहाय। ८।
छुय करुन च्य माज्य म्य अथरुट छुस न पुखत धात छुस व खुट
खुट वस्या नख च्यानि रुस यियि ब च्ययि याद पावहाय। ९।
छख च पान जानान माज्य गुन-अवगुन त हाल-च्याल
तोति वछि त माज्य म्य कर्मफाल सुखमुख व्यछनावहाय। १०।
कुस अखा द्राव च्यि निशि खालि भाव माल यिमि च्यि त्राव्यय नाहि
छयँव अथव क्याह अनय ब डालि तोति आत्मदीप आलवहाय। ११
गछ म्य रोजनि च्यान्य स्मरण सुख दुख विजि त क्षण क्षण
छा म्य अथि यि छु च्ययि तान्य तियि च्य अथि वछिनावहाय। १२
जाँह मा डल दियिज्यम ह्यस त होश दिथ मनस म्य शम त 'सन्तोष'
छुम म्य कूत च्योम अनुराग सीन मचर्यथ ब हावहाय। १३।

۷- ٹماٹوں دودھ ملا کر گرم۔ پانی پینے روزانہ کھڑے
دھوپ
~~دھوپ~~ چھوٹا لوگ ہونہ دودھ درد۔ بہروپ کہنہ چھوٹے

جگنچ ماتا شاردا مہ نرال منہ مظلوم کم۔

جگتیج ماتا شانکا۔ بیمہ ٹرال منڈی مظفر گڑھ۔
پیراران ویہہ پیٹ کال گرم۔ مرچھوں گوشت پھلاؤ گڑھ۔

بیمہ وہنہ مصہ ویلہ نہ ٹرار۔ وہنہ وہنہ شت ماتا وہنہ آر۔
کہ ماتا کسنئی منی بھار۔ شمشی مشی چکر گڑھ۔ جگتیج ماتا۔

کرم وچہ وول۔ جنمہ مچہ وول۔ وری وری کران چھم نم نہ جلاں قربان
کن کہ نہ بہ روپس بہ پیران۔ پم بل اچھر ناؤ نا بیٹم۔ جگتیج۔

سن چھوم گوشت انڈری دلس۔ ماتا پل کرتم مصکا مشکلس۔
طے کر ناؤ گڑھ منزلس۔ انڈرت بہ خود گھنڈ رام۔ جگتیج ماتا۔

کانی نہ کر دھن بیگھ ٹرٹ۔ لوبن نہ مرین ٹرٹ رکھ۔
نہ ٹرٹ گھٹ منڈ روٹ۔ اہ مار منڈ شاہ لاؤ گڑھ۔ جگتیج

ادش ادت نہ کیا نیرہ مدد۔ برتلہ گگ لالا پان سدھا۔
منش ماتا جم ریت ادھا۔ یمی شو بھی نس پچھاؤ گڑھ۔ جگتیج

اوره آؤ عادم بنتھ انسان - موڑ ار ہیون ہیون ہند مسلمان
آیک ربڑ شمشان بئی روڑہ قبرستان - موڑ ار ---

کر نظر پر بت قلی سی کئی - اکہ اند مخدوم صاب کیا شوہ دن -
بیہ اند چکر شوری کیا چی پرزلان - موڑ ار ہیون ---

اکہ ژائے مدرس پوز کرئے - بیا کہ ژروڑ مسجد ملا ر پیرے -
آیک وائی گئلا - بئی ڈٹ اذان - موڑ ار ہیون ---

بئی گئی کہ کہ اللہ اکبر - بئی پڑ کمتام جے شنکر -
آیک روڑہ گیا بئی روڑہ قرآن - موڑ ار ہیون ---

اکہ اند شاہ صاب سیہ خانی - بئی اند مانا خالی شوری -
ت دنان چی محلہ مزہ پرستان - موڑ ار ہیون ہیون -
ہرتہ وچی نکہ نکی ہند مسلمان - اکہ آکی کھ پاٹھ لولہ پگران
میاکانی تت شاہ سیمران - موڑ ار ہیون ہیون ہند مسلمان

ॐ

राज्य रानी छत्रेव ताजदार - जार पार बोनी
رانی چھتی تاج دار - ژار پار بوزی ماجے
چھ پتھر - پی تنی مار - ژار پار بوزی ماجے

ناڑ چون سرده آده کار - ژرگنگ پٹ چھک بار
نی میر نوله موله تلار - ژار پار بوزی ماجے -

چوئی تر شول ماجی در دس - پاپن کران بس بس -
سر پیٹ چھی سور - ژار پار بوزی ماجے -

پرارن یته کئی چوئی کئی - یته ساری چھی بے کسی
ساری چھی انتظار - ژار پار بوزی ماجے -

پوپٹر شمس گیت - چھس کران تی ژی پٹ -
بوڑه چون چھوئی دربار - ژار پار بوزی ماجے -
جاڑه جاڑ دربار چون - بھکتن ماؤ درشن -
گتس چھ چھکی سرکار - ژار پار بوزی ماجے +

" جے شنکر جی "



اوتار کرشن کول